* श्रीमते रामानुजाय नमः *

श्रीरामानुजाब्द ९७९ अप्रैल १९९५

अनन्त

भाष्यकार श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्यजी महाराज

सन्देश

वर्ष–२३ मासिक-प्रकाशन अंक–११

श्रीवेंकटेश देवस्थान ८०/८४ फणसवाड़ी, बम्बई—२

विषयानुक्रमणिका

सम्पादक मण्डल

सर्वश्री स्वामी अनिरुद्धाचार्यजी महाराज, चांदोद

श्रीत्रिदण्डि श्रीमन्नारायण रामानुजजीयर स्वामीजी महाराज, सीतानगरम्।

श्रीस्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी, वेदान्ताचार्य, बम्बई। श्रीमती राजकुमारी धूत बम्बई

प्रधान सम्पादक — पण्डित श्रीकेशवदेवजी शास्त्री, साहित्याचार्य, सा० रत्न, श्रीधाम-वृन्दावन

वार्षिक भेंट भारत में २५)रु० आजीवन ३०१)रु०	कर्म हमारा जीवन है। धर्म हमारा प्राण है॥	साधारण प्रति भारत में ६)०० रु०

अनन्त सन्देश

मासिक प्रकाशन

अनन्ताचार्यवर्याणामनन्ताऽद्भुतभावदः। जीयादनन्तसन्देशः सदनन्तप्रभावतः ।।

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीं, तद्वक्षःस्थलनित्यवासरसिकां तत्क्षान्तिसम्वर्धिनीम् ।
पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं, वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ।।

वर्ष २३ सम्वत् २०५२ वैशाख | श्रीधाम वृन्दावन | अप्रेल १९९५ अङ्क-११

श्रीरामानुज चतुःश्लोकी

अनिशं भजतामनन्यभाजां चरणाम्भोरुहमादरेण पुंसाम् ।
वितरन्निभृतं विभूतिमिष्टां जय रामानुज! रंगधाम्नि नित्यम् ।।१।।

भुवि नो विमतांस्त्वदीयसूक्तिः कुलिशीभूयकुदृष्टिभिस्समेतान् ।
शकलीकुरुते विपश्चिदीड्या जय रामानुज! शेषशैलशृङ्गे ।।२।।

श्रुतिषु स्मृतिषु प्रमाणतत्वं कृपयालोक्य विशुद्धया हि बुद्धया ।
अकृथाः स्वत एव भाष्यरत्नं जय रामानुज! हस्तिधाम्नि नित्यम् ।।

जय मायिमतान्धकारभानो ! जय बाह्यप्रमुखाटवी कृशानो !
जय संश्रितसिन्धुशीलभानो! जय रामानुज ! यादवाद्रिशृङ्गे ।।४।।

रामानुज चतुःश्लोकीं यः पठेन्नियतस्सदा ।
प्राप्नुयात्परमां भक्तिं यतिराजपदाब्जयोः ।।

।। श्रीरामानुजचतुःश्लोकी समाप्ता ।।

सम्पादकीय

शेषावतार आचार्य श्रीरामानुज

भगवत्पाद जगद्गुरु श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज शेषावतार थे। **प्रथमोऽनन्तरूपश्च द्वितीयोलक्ष्मणस्तथा। तृतीयो बलरामश्च कलौ रामानुजो मुनिः॥** प्रथम आदिशेष, द्वितीय जन्म राम के अनुज लक्ष्मण तृतीय बलरामजी (श्रीकृष्ण के अग्रज) कलिकाल में श्रीरामानुजाचार्य ये शेषजी के अवतार हैं।

आपका जन्म मद्रास से कुछ दूर श्रीपेरुम्बुदूर नामक गाँव में हुआ। इसी गाँव को श्रीमहाभूतपुरी भी कहते हैं। यहाँ आदिकेशव भगवान् की सन्निधि है। यहीं के निवासी आसूरि केशवाचार्य और उनकी धर्मपत्नी कान्तिमती के पुत्ररूप से श्रीरामानुजाचार्य ने सन् १०१६ में पिंगल नाम सम्वत्सर, आर्द्रानक्षत्र चैत्रमास शुक्ल पंचमी तिथि गुरुवार कर्कटलग्न में जन्म लिया। ये हारित गोत्र, कृष्ण यजुः शाखाध्यायी थे।

सोलह वर्ष की आयु में श्रीरामानुज का विवाह रचा गया, रक्षकाम्बा के साथ। माता-पिता बड़े प्रसन्न थे। थोड़े समय बाद ही श्रीकेशवाचार्य परमधाम सिधार गये। रामानुज ने पिता का और्ध्वदेहिक सम्पूर्ण वैदिक कर्म सविधि सम्पन्न किया और माता को साथ लेकर कांचीपुरी में रहने लगे। वहाँ के प्रसिद्ध अद्वैती यादवप्रकाश के शिष्य होकर उनसे अध्ययन करने लगे। यादवप्रकाश भी प्रतिभाशाली शिष्य को पाकर प्रसन्न थे। एक दिन **'तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीकमेवमक्षिणी'** इस श्रुति के अर्थ पर गुरु शिष्य में विवाद हो गया। गुरु ने इसका अर्थ कपि+आस्यते बन्दर का पृष्ठ भाग के समान लालिमा वाला जो कमल उसकी तरह भगवान् के नेत्र हैं। इस प्रकार महनीय विष्णु भगवान् के नेत्रों के लिये निम्न हीनोपमा शोभित नहीं है। रामानुज का अर्थ–कं जलं पिवतीति कपिः सूर्यः, तेनास्यते विकास्यते इति कप्यासः अर्थात् कं माने जल उसको पीने वाला सूर्य, उस सूर्य की किरणों से खिला हुआ जो पुण्डरीक—कमल उसके समान भगवान् के नेत्र हैं। इस प्रकार विलक्षण अर्थ को सुनकर यादवप्रकाश बहुत रुष्ट हुए किन्तु अन्त में भगवान् की आज्ञा से और अपनी माता की प्रेरणा से श्रीरामानुज स्वामी के चरणाश्रित शिष्य होकर परमधाम को चले गये। इसीलिए श्रीरामानुज स्वामी के विषय में कहा गया—

तस्मै रामानुजार्याय नमः परमयोगिने।
यः श्रुतिस्मृतिसूत्राणामन्तर्ज्वरमशीशमत्॥

आपने श्रुतियों स्मृतियों, सूत्रों के अन्तर ज्वर को शान्त किया।

श्रीरामानुज स्वामी का प्रभाव सर्वत्र फैल चुका था। श्रीयामुनाचार्य ने उन्हें बुलाकर लाने के लिये अपने शिष्य महापूर्ण स्वामी को श्रीरङ्गम् से कांची भेजा। रामानुज उनके साथ श्रीरंगम् गये, लेकिन तब तक यामुनाचार्य परमपद जा चुके थे। कावेरी के पावन तट पर उनका पार्थिव शरीर रखा था, रामानुज बड़े खिन्न हुए। दर्शन करके तीन अंगुलियों को संकुचित देख रामानुज स्वामी ने पूछा किन्तु शिष्यों ने कहा कि आप ही जानें। तब रामानुज ने कहा उनके तीन मनोरथ शेष हैं उन्हें मैं पूर्ण करूँगा—सम्पूर्ण श्रुति स्मृति सूत्रों का समन्वय करके 'श्रीभाष्य' की रचना करूँगा, इसे सुन एक अंगुली सीधी हो गई। जीवों पर निर्हेतुक दया करके श्रीपराशर मुनि ने श्रीविष्णुपुराण रत्न की रचना की मैं भी किसी वैष्णवका नाम पराशर' रखूँगा। दूसरी अंगुली खुल गयी। मैं श्रीवैष्णव मत में स्थित होकर अज्ञानी जीवोंको पंचसंस्कार से संस्कृत करूँगा। प्रपत्ति धर्म परायण करके उन जीवों की रक्षा करूँगा। इस तीसरी प्रतिज्ञा करने से तीसरी अंगुली सीधी हो गयी। इस प्रकार श्रीयामुनाचार्य स्वामीकी अन्तिम इच्छायें

श्रीरामानुज ने पूर्ण की और श्रीरंगनाथ भगवान् के दर्शन बिना किये कांची लौट आये। श्रीवरदराज भगवान् के लिये एक घड़ा जल शालीकूप से प्रतिदिन लाते और इस प्रकार सेवा में लग गये।

श्रीरामानुज स्वामी ने बताया कि जैसे यज्ञोपवीत संस्कार के बिना वेदाध्ययन और गायत्री जप का त्रैवर्णिकपुरुष अधिकारी नहीं होता, वैसे ही बिना पञ्चसस्कार—'**ताप: पुण्ड्रस्तथानाम मन्त्रो यागश्च पञ्चम**'के बिना कोई भी भगवत्सेवा पूजा तथा मोक्ष का अधिकारी नहीं हो सकता है। '**प्रपन्नादन्येषां न च दिशति मुकुन्दो निजपदम्**' शरणागत प्रपन्न को ही मोक्ष मिलता है। अर्जुन ने इसीलिए कहा–'**शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्**'

श्रीकाञ्चीपूर्ण स्वामो श्रीवरदराज भगवान् (काञ्ची) का पंखा झलने की सेवा करते और भगवान् से वार्तालाप भी करते थे। एकबार श्रीरामानुज स्वामी ने अपने कुछ प्रश्न श्रीकांचीपूर्ण स्वामी को दिये, उनका समाधान श्रीवरदराज भगवान् से पूछने की प्रार्थना की। प्रश्न ये थे—(१) मोक्ष के नाना उपाय हैं, परन्तु कौनसा सुलभ है? (२) अन्तिम कर्त्तव्य क्या है? (३) प्रपन्न का मोक्ष कब होगा? (४) मैं कौन से आचार्य का शिष्य बनूँ? (५) पर तत्व कौन है? (६) सिद्धान्त कौन-सा भगवत् सम्मत् है? श्रीवरदराज भगवान् ने श्रीकाञ्चीपूर्ण स्वामी को उत्तर दिया—(१) मैं-नारायण ही पर तत्व है। (२) जीव और ईश्वरका भेद ही सिद्धान्त है। (३) प्रपत्ति ही मोक्ष का उपाय है। (४) मेरे भक्तों के लिए अन्तिम स्मृति की आवश्यकता नहीं है। (५) मेरे शरणागत भक्तों को मैं देहावसान होने पर परमपद देता हूँ। (६) श्रीपूर्णाचार्य महात्मा का समाश्रयण ग्रहण करो। यह श्रीरामानुज को शीघ्र बता दो। श्रीकाञ्त्रीपूर्ण स्वामी ने श्रीरामानुज को सब बता दिया। श्रीरामानुज स्वामी महापूर्ण स्वामी का शिष्यत्व ग्रहण करने श्रीरङ्गम् आ रहे थे, महापूर्ण स्वामी श्रीरंगम् से काञ्ची पधार रहे थे, दोनों का संगम मधुरान्तक नामक गाँव में हुआ। श्रीरामानुज की प्रार्थना पर श्रीमहापूर्णस्वामी ने मधुरान्तक गाँव में श्रीरामचन्द्र भगवान् की सन्निधि में श्रीवैष्णवदीक्षा पंचसंस्कार प्रदान किये। भगवत् सम्बन्ध के बिना ज्ञान, वैराग्य व्यर्थ है।

श्रीमहापूर्ण स्वामी की आज्ञा से अट्ठारह बार जाकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी से मन्त्रार्थ का अध्ययन किया। श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी की आज्ञा से श्रीरामानुज ने श्रीमालाधर स्वामी से 'सहस्रगीति' का व्याख्यान पढ़ा। फिर उनकी आज्ञा से श्रीवररंगस्वामीजी की सन्निधि में श्रीरामानुज ने सम्पूर्ण वेदान्तादि रहस्यार्थ तथा श्रीशैलपूर्ण स्वामी से वाल्मीकीय रामायणका अध्ययन किया। श्रीवैष्णवतापूर्ण करने के लिए इन सब विद्याओं का ज्ञान एक आचार्यसे न मिल सके तो और आचार्य करके ज्ञानपूर्ण करना उचित है।

श्रीरामानुज अपने शिष्य कूरेश को साथ लेकर शारदापीठ कश्मीर गये। वहाँ से सरस्वती देवी को प्रसन्न कर व्यासजीके शिष्य बोधायन मुनिकृत-वृत्ति के सहारे वेदान्त का व्याख्यान करने के लिए वृत्ति को श्रीरंगम् लाये। द्रमिडभाष्य, बोधायनवृत्ति सिद्धित्रय के सहारे श्रीकूरेश को लेखक बनाकर श्रीरामानुजाचार्यने श्रीभाष्य की रचना की। इसमें प्रथम अर्थपञ्चकका निरूपण है–स्व (जीव) स्वरूप परमात्मस्वरूप, बिरोधिस्वरूप, मोक्षोपायस्वरूप, फलस्वरूप यही अर्थपंचक है। इसका यथार्थ वर्णन श्रीभाष्य में वर्णित है। तत्वत्रय–ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन तत्व शाश्वत् हैं। वर्ण-आश्रम के अनुकूल कर्मानुष्ठान करते हुए श्रीमन्नारायण की उपासना करने से ही मोक्षरूप फल होता है।

श्रीकूरेश उञ्छवृत्ति से निर्वाह करते। एक समय वर्षा न होने से उञ्छ प्राप्त न हो सका तब वे भगवान् का चरणोदक पीकर रह गये। उनकी धर्मपत्नी ने भगवान् से प्रार्थना की भगवान् ने अर्चकों को आदेश दिया वे प्रसाद लेकर कूरेश के पास पहुँचे, उन्हें आश्चर्य हुआ। अपनी पत्नी से

पूछा और उसी प्रसाद को पत्नीको पवाया, जिससे दो पुत्र हुए। गोविन्दाचार्य द्वारा दोनों पुत्रों को बुलाकर श्रीरामानुजाचार्य ने बड़े लड़के का 'पराशर' और छोटे का नाम 'व्यास' रखा। इससे दूसरी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। श्रीयामुनाचार्य स्वामी का मनोरथ पूर्ण किया।

श्रीवैष्णवदीक्षा लेकर शरणागतिधर्म का प्रचार कर द्रविड वेद का विस्तार श्रीरामानुजाचार्य ने किया। ऐसा करने से श्रीयामुनाचार्य के तृतीय मनोरथ को भी पूर्ण किया। अपने शिष्य गोविन्द भट्टार्यके पुत्र का नाम भी श्रीपरांकुश पूर्णार्ण रखा।

रचनायें—श्रीरामानुजाचार्य स्वामी ने अपने १२० वर्ष के आयुष्य में ९ ग्रन्थों की रचना की—(१) श्रीभाष्य, (२) गीताभाष्य, (३) वेदार्थसंग्रह, (४ वेदान्तदीप, (५) वेदान्तसार, (६) गद्यत्रय, (ये तीन रचनायेंहैं)(७)भगवदाराधन ग्रन्थ। प्रत्येक श्रीवैष्णव का कर्तव्य है कि वे इन ग्रन्थों का स्वाध्याय यथाशक्ति अवश्य करें।

उपदेश –अन्तिम समय में श्रीरामानुजाचार्य ने भगवान् से कहा—'आपने जो परमपद मुझे दिया है, उसी को मेरे सम्बन्ध - सम्बन्धी शिष्यों को भी देना, भगवान् ने उसे स्वीकार किया। श्रीरामानुज स्वामी ने ७२ वाक्यों में उपदेश दिया है, जो श्रीरंगनाथ प्रेस, वृन्दावन में छपा है। उनमें मुख्य इस प्रकार हैं—अहङ्कार और ममकार से युक्त पुरुषका संग सर्वथा त्याज्य है। उपाय बुद्धि से कर्म करना वर्जित है। कैंकर्यबुद्धिसे किया कर्म भगवान् का परितोष करता हैं। फलेच्छासे कर्म नहीं करना, श्रीभाष्य का अध्ययन अध्यापन, मनन, प्रचार से ईश्वर कैंकर्य हो जाता है, इसमें असमर्थ हो तो पूर्वाचार्यों की गाथाओं का रातदिन पठन-पाठन करे। उसमें भी असमर्थ हो तो दिव्यदेशों में भगवत् कैंकर्य करे। भगवन्मूर्तियों की प्रतिष्ठा करे। अर्थ सहित द्वयमन्त्रका अनुसंधान करता रहे। दिव्यदेशों में कुटी बनाकर निरन्तर निवास करे। सबसे सुलभ उपाय है कि ज्ञान वैराग्य युक्त शरणागत धर्म जानने वाला अहङ्कार-ममकार से रहित महात्मा का आश्रय लेकर निवास करे।

अष्टगद्दी—श्रीरामानुजाचार्य के शिष्य श्रीवरवरमुनि स्वामी ने अष्टगद्दी स्थापित करके बहुत बड़ा प्रचार-प्रसार किया—(१) श्रीवानाचलयोगी (२) भट्टनाथमुनि, (३) श्रीनिवासयति, (४) देवराजगुरु (५) वाधूलवरदनारायण, (६) प्रतिवादिभयङ्कर, (७) रामानुजगुरु, (८) प्रणतार्तिहारी। ये अष्ट गद्दियों के महापुरुष हैं।

प्रतिवर्ष मेषार्द्रामें भगवान् भाष्कार जगद्गुरु श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी महाराज की जयन्ती मनाकर श्रीवैष्णव समाज अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। यह उत्सव कहीं दसदिन का कहीं पाँच-तीन दिन का मनाया जाता है, किन्तु हम श्रीवैष्णव जिन श्रीरामानुज स्वामीजी के नाम का सहयोग ले अपने सांसारिक भोगों की पूर्ति कर रहे हैं, उनके उपदेशों पर रंचमात्र भी ध्यान नहीं देते, बल्कि हम उन आचरणों को और करते चले जा रहे हैं जिनसे श्रीवैष्णव समाज कलङ्कित होता जा रहा है। पूर्ण भौतिकवाद-भोगवाद में लिप्त यह समाज होता जा रहा है। क्षुद्र स्वार्थ के पीछे प्राचीन आचार्यों की मर्यादाओं का उल्लंघन हिंसा, द्वेष, घृणा का वातावरण इस समाज में दुर्गन्ध पैदाकर रहा है। परिणाम है—अपहरण, हिंसा सरासर देखते हुए भी मौनावलम्बन, अन्याय को सहना 'अद्वेष्टासर्वभूतानां मैत्र. करुण एव च' आदि का सर्वथा त्याग। क्या श्रीरामानुज जयन्ती पर हम इस विषय पर कुछ सोचेंगे?।

संक्षिप्त अर्थपञ्चक

--पं० श्रीकेशवदेव शास्त्री, वृन्दावन

□

प्राप्यस्य ब्रह्मणो रूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः । प्राप्त्युपायं फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधि च ।।
वदन्ति सकला वेदास्सेतिहासपुराणकाः । मुनयश्च महात्मानो वेदवेदार्थवेदिनः ।।

[वृद्धहारीतस्मृतिवचनम्, पाञ्चरात्रे हारीत संहितायाञ्च]

श्रीवैष्णव सम्प्रदाय में पञ्चसंस्कार होने अर्थात् 'तापः पुण्ड्रस्तथा नाम मन्त्रो यागश्च पंचमः । अमी ही पञ्चसंस्काराः परमैकान्तिनां मताः ।। तप्त शंख चक्र धारण, ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना, नाम-संस्कार-भगवन्नाम रखना, मन्त्र प्रदान करना (मूलमन्त्र, द्वयमन्त्र, चरममन्त्र) और याग-मूलमन्त्र, द्वादशाक्षर मन्त्र, षडक्षर मन्त्र, गायत्री मन्त्रों से शुद्ध गोघृतकी अग्नि में आहुति देना इन पञ्चसंस्कारों से सम्पन्न जीव को आचार्य तत्वत्रय अर्थात् तीन तत्वों– ईश्वर-जीव-प्रकृति इन तीन तत्वों का अर्थ-पञ्चक– (१) परमात्मा के रूप का, (२) जीवात्मा के रूप का, (३) भगवत् प्राप्ति में साधनभूत कर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रपत्ति आदि का स्वरूप, (४) भगवत् प्राप्ति का फल—भगवन्नित्य कैंङ्कर्यरूप पुरुषार्थ का स्वरूप, (५) प्राप्ति विरोधि च, ऐसे भगवान् की प्राप्ति में विरोधिरूप प्रकृति का स्वरूप ये ही अर्थपञ्चक कहलाते हैं। इनका उपदेश भी गुरुजन शिष्यों को देते हैं। जिससे जीव का कल्याण हो सके अर्थात् भगवद्धाम में पहुँचकर दिव्य शाश्वत् कैङ्कर्य को प्राप्त कर आनन्द में मग्न हो सके।

प्राप्यस्य ब्रह्मणः रूपम्—चेतनानां प्राप्यभूतस्य ब्रह्मणः परब्रह्मणः परमात्मनः रूपं स्वरूपम्। जीवात्माओं के प्राप्त होने योग्य परब्रह्म परमात्म स्वरूप। परमात्मा-ज्ञानानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वशेषी, सर्वान्तर्यामी, दिव्यमङ्गलविग्रहवाला है, उसमें सम्पूर्ण कल्याण गुणोंका खजाना है, हेयगुण=त्याज्य गुणों से रहित है, वह परमात्मा दिव्यमहिषी, दिव्यपरिजन=दिव्यसेवक तथा दिव्य परिच्छद=साधनों से युक्त है, दिव्य परमपद=वैकुण्ठधाममें वह निवास करता है,सर्व जीवात्माओंके द्वारा प्राप्त करने योग्य है, इत्यादि गुणों से विशिष्ट प्राप्य परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप है।

२- **प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः**—ऐसे परब्रह्म को जो प्राप्त करता है, उस जीवात्मा का स्वरूप अर्थात् वह जीवात्मा भी ज्ञानानन्द स्वरूप है, अणु परिमाण वाला है भगवान् का शेष (दास) भूत है, भगवान् के परतन्त्र है, केवल परमात्मा का ही भोग्य भोगकरने योग्य है, धर्मभूत सर्वव्यापक ज्ञान से वह विशिष्ट है, बद्धदशा में प्रकृति के परतन्त्र होने से सुख दुःख आदिक द्वन्द्वों का अनुभव करने वाला है, और इसके ज्ञान में संकोच विकास होता रहता है। अपहत पाप्मत्वादि गुणाष्टक विशिष्ट जो परमात्मा है उसे प्राप्त करना ही जीवात्मा का स्वरूप है। प्रत्यगात्मनः=प्रति अञ्चतीति प्रत्यङ् (प्रत्यक्) प्रत्यक्त्वं च-स्वस्मै स्वयं भासमानत्वम्। यह जीवात्मा अपने साक्षात्कार के समय अन्य किसी सामग्री की अपेक्षा नहीं रखता। जैसे घट के प्रत्यक्ष के समय घट से अतिरिक्त प्रकाश की अपेक्षा रहती है। ऐसा जीवात्मा अपने प्रत्यक्ष के समय स्वयं ही भासित होता है।

३- प्राप्त्युपायम्—ऐसे जीवात्मा के द्वारा भगवत् प्राप्ति में साधनभूत कर्म, ज्ञान, भक्ति आदिक उपायों के स्वरूप का कथन ही प्राप्त्युपाय है।

४- फलं प्राप्तेः--भगवान् की प्राप्ति का फल, अर्थात् भगवत् प्राप्ति के बाद देशविशेष (वैकुण्ठ) में भगवान् का नित्य कैङ्कर्यरूप पुरुषार्थ को प्राप्त करना ही फल प्राप्ति है।

५- प्राप्ति विरोधि च—इस प्रकार भगवत् प्राप्ति का विरोधिभूत प्रकृति का स्वरूप। गुण-त्रय सत्वरज तम रूपा, सुखदुःख आदिक द्वन्द्वों की कारणभूता, भगवत् प्राप्ति में प्रतिबन्धक=विघ्न-रूपा प्रकृति (अचेतन) का स्वरूप ये ही अर्थपञ्चक हैं।

इस अर्थपञ्चक को सम्पूर्ण वेद कहते हैं। सभी इतिहास पुराण इसी का वर्णन करते हैं। वेदवेदार्थवेदिनः='वेदाच्छास्त्रं परं नास्ति' वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है, और 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः' सम्पूर्ण वेदों से मैं ही जानने योग्य हूँ। प्रमाण और प्रमेय उभयात्मक मैं ही हूँ। **महात्मानः**= 'स महात्मा सुदुर्लभः' वह महात्मा बड़ा दुर्लभ है। इससे महात्मा का अर्थ ज्ञानियों में अगुआ अग्र-गामी। **मुनयश्च**=भगवान् के गुण, विग्रह, विभूतियों का मनन करने वाला अर्थात् मन से अनुभव करने में पारंगत या निष्णात परांकुशादि दिव्य सूरिजन, ये ही अर्थपञ्चक ज्ञान को कहने में समर्थ हैं।

इतिहास पुराणों के रचयिता भी मुनि कहे गये 'सेतिहासपुराणकाः' इस प्रकार उनका कथन भी हो गया। 'मुनयश्च' इसमें च शब्द समुच्चायक है, ये मुनि और परांकुश परकाल आदिक सभी कहे गये हैं, अर्थात् निर्हेतुक भगवत् कृपाकटाक्ष प्राप्त और जिन्होंने परावर तत्व का यथार्थ अर्थ का साक्षात् कर लिया है, जो ज्ञानियों में आगे हैं, भगवान् के मनन=मानसानुभव परायण हैं वे सब मुनि हैं।

कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि पुराण इतिहास आदि ये वेदों के यथार्थ अर्थ का निरूपण नहीं कर पाते, तब परांकुशादि सूरियों की दिव्य श्रीसूक्तियाँ ही उस प्रधान का सम्यक् उप-बृंहण करती हैं,इसीलिए वेद विरुद्ध अर्थको प्रतिपादन करनेवाली स्मृतियाँ प्रमाण नहीं मानी जातीहैं। स्मृति प्रामाण्याधिकरण निरूपण पर खरी उतरने वाली स्मृतियाँ ही प्रमाण हैं, अन्य नहीं।

अथवा 'मुनयश्च' इसमें च शब्द एवकार के अर्थ में कहा गया है। मुनय एव वदन्ति=मुनि ही उस यथार्थ अर्थ को कहते हैं। अतएव परांकुश परकाल आदिक आलवारों की श्रीसूक्तियाँ ही प्रधान रूप से प्रमाण हैं। धर्म का निर्णय करने वाले मुनियों के वचन से यथार्थ का निश्चय होता है। जैसा कि सर्वधर्म समयज्ञ आपस्तम्ब मुनि अपने सूत्रों के आरम्भ में कहते हैं--'धर्मज्ञसमयः प्रमाणं वेदाश्च' धर्म को जानने वाले धर्मज्ञ कहाते हैं। जैसे 'रामो विग्रहवान् धर्मः' सशरीर राम धर्म हैं। कृष्णं धर्मं सनातनम्' श्रीकृष्ण स्वयं सनातन धर्म हैं इस प्रकार सिद्धधर्मभूत परमात्मा नारायण को और उनकी कृपा से हस्तामलकवत् अति निकट से उनका साक्षात्कार करने वाले परांकुश परकालादि मुनियों, धर्म के जानने वालों का समय (सदाचरण) ही प्रणाम है।

वेदाश्च—यहाँ च शब्द अन्वाचय में प्रयुक्त है। जैसे 'भिक्षामट' भिक्षा करने जाओ 'गाञ्चा-नय' गाय को भी लेते आना। इस कथन में भिक्षा करने जाना यही प्रधान कथन है। गौ का लाना गौण है। इसी प्रकार वेद भी प्रमाण हैं। वेद विरुद्ध सब गौण है।

★

गतांक से आगे—

महाभारतामृतम्

卐

जब भीमसेन ने कर्ण को रथ की बैठक में गिरा दिया। तब आपका पुत्र दुर्योधन अपने भाईयों से बोला—तुम शीघ्र जाओ, और कर्ण की रक्षा करो। इतना सुनते ही श्रुतर्वा, दुर्धर, क्राथ (क्रथन) विवित्सु, विकट, सम, निषङ्गी, नन्द, उपनन्द, दुष्प्रधर्ष, सुबाहु, वातवेग, सुवर्चा, धनुर्धर, जलसन्ध, शल और सह ये महाबली, पराक्रमी आपके पुत्रगण रथों में बैठकर भीम के पास जा पहुँचे और भीम को चारों ओर से घेर लिया। वे चारों ओर से बाण वर्षा करने लगे। भीम ने पीड़ित हो दुर्योधन के पचास भाइयों के पचासों रथियों को शीघ्र ही नष्ट कर दिया। विवित्सु का सिर काट डाला। धृत-राष्ट के दो पुत्रों को मार डाला। ये विकट और सम थे। क्राथ को नन्द और उपनन्द ने मार गिराया। कौरव सेना के पांव उखड़ गये। कर्ण ने यह देख भीम का सामना किया। दोनों का युद्ध अति भयंकर हुआ। परस्पर दोनों एक दूसरे को घायल करने लगे। कर्ण भीम के प्रहार से कांप उठा। कर्ण ने भीम का रथ खण्ड-खण्ड कर दिया। भीम ने कर्ण की सेना के सात सौ हाथियों का संहार कर डाला, शकुनि के बावन हाथियों को भी मार डाला। पाँच सौ रथों ने भीम को घेर लिया। भीम ने गदा से उन पाँच सौ रथी वीरों को यमलोक पहुँचा दिया। शकुनि के तीन हजार घुड़सवारों को मारकर भीम अब कर्ण के सामने आ गया। बाणों से कर्ण को ढँक लिया। कर्ण के बाणों से भीम ढँक गये। सात्यकि भीम के पृष्ठ रक्षक थे। दोनों सेनायें भयंकर युद्ध कर रही थीं। कौरव सेना व्यथित हो उठी।

दूसरी ओर गाण्डीव धनुष की टंकार सुनायी देती थी। अर्जुन संशप्तकों का कोसलदेशीय वीरों का एवं नारायणी सेना का संहार कर रहे थे। अब अर्जुन सुशर्मा के पास जा पहुँचे। सुशर्मा ने दस बाणों से अर्जुन को घायल कर श्रीकृष्ण की दाहिनी भुजा पर तीन बाण मारे। अर्जुन ने नागास्त्र के प्रयोग कर संशप्तकों के पैर बाँध दिये। अब उनका वध करना आरम्भ किया। संशप्तकों के चौदह हजार पैदल दस हजार रथ तीन हजार हाथियों का वध कर अर्जुन देदीप्यमान दीख पड़े। तब कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि तथा दुर्योधन ने शीघ्र आकर अपनी सेना का उद्धार किया। धृष्टद्युम्न को कृपाचार्य की ओर जाते कृतवर्मा ने उन्हें रोका। युधिष्ठिर को कृपाचार्य की ओर जाते देख अश्वत्थामा ने रोका। शिखण्डी, कृपाचार्य के बाणों का ग्रास बना जा रहा है देख सुकेतु उसकी सहायता को आ गया। वे दोनों युद्ध करने लगे, शिखण्डी वहाँ से भाग निकला। कृपाचार्य ने क्षुरप्र से सुकेतु के शिर को काटकर नीचे गिरा दिया। अब अश्वत्थामा युद्ध करने लगा। सात्यकि के सारथि का वध होने पर युधिष्ठिर अश्वत्थामा को छोड़कर दूसरी ओर चले गये। नकुल सहदेव के साथ दुर्योधन का घनघोर युद्ध हुआ। धृष्टद्युम्न से दुर्योधन की पराजय हो जाने पर कर्ण द्वारा पाञ्चाल सेना सहित योद्धाओं का संहार भीमसेन से कोरव योद्धाओं का सेना सहित नाश होने पर अर्जुन ने अश्वत्थामा को अपना पराक्रम दिखाकर बढ़ी फुर्ती से उसके गले की

हँसली पर 'वत्सदन्त' नामक बाण से गहरी चोट पहुँचायी। अश्वत्थामा मूर्च्छित हो गया। सारथि उसे रणभूमि से दूर हटा ले गया। उस समय रणभूमि में अर्जुन ने संशप्तकों का भीम ने कौरवों का और कर्ण ने पाञ्चाल सैनिकों का क्षणभर में संहार कर डाला। युधिष्ठिर पर संग्राम में अधिक प्रहार हुये थे, जिससे उन्हें गहरी वेदना हो रही थी, वे रणभूमि से एक कोस दूर हटकर खड़े थे।

दुर्योधन कर्ण के पास जाकर शल्य तथा अन्य राजाओं से बोला। कर्ण ! यह स्वर्ग का खुला द्वार रूप युद्ध बिना इच्छा के प्राप्त हुआ है। तुम लोग युद्धस्थल में पाण्डवों का वध करके भूतल का राज्य प्राप्त करोगे अथवा वीरगति को पाओगे। अश्वत्थामा ने कहा मैं धृष्टद्युम्न को मारे बिना अपना कवच नहीं उतारूँगा। अर्जुन और भीम यदि युद्ध में धृष्टद्युम्न को रक्षा करने आयेंगे तो मैं उन्हें भी मार डालूँगा। युद्ध होने लगा। सर्वत्र कोलाहल व्याप्त हो गया। अब अर्जुन का श्रीकृष्ण से युधिष्ठिर के पास चलने का आग्रह तथा श्रीकृष्ण का उन्हें युद्ध भूमि दिखाते हुए तथा वहाँ का समाचार बताते हुये रथ को आगे बढ़ाना।

अब युधिष्ठिर आदिक पाण्डव दल के लोग थे दूसरी ओर कर्ण आदिक कौरव दल। दोनों का भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ खून पानी की तरह बहाया जाता था। धृष्टद्युम्न ने कर्ण पर आक्रमण किया। कर्ण ने उन्हें रोक दिया। भयंकर युद्ध हो रहा था कि धृष्टद्युम्न के पास अश्वत्थामा आ गया और बोला—अरे ! ब्रह्महत्या करने वाले पापी ! खड़ा रह, यह कह अपने बाणों से धृष्टद्युम्न को ढँक दिया। दोनों का युद्ध काल का काल से हो रहा था। कर्ण ने धृष्टद्युम्न के धनुष, शक्ति, गदा, ध्वज, अश्व, सारथि एवं रथ को तहस-नहस कर डाला। तब उससे तलवार हाथ में लेकर युद्ध किया। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न की तलवार को भी काट डाला। इसी समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—पार्थ ! अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न के वध के लिये कैसा प्रयत्न कर रहा है। तुम इसे बचाओ। श्रीकृष्ण अर्जुन को आते देख अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न के वध के लिये विशेष प्रयत्न करने लगा। अब अर्जुन के बाणों से पीढ़ित अश्वत्थामा अपने रथ पर जा चढ़ा और अपने बाणों से अर्जुन को घायल कर दिया। सहदेव धृष्टद्युम्न को अपने रथ से रणभूमि से अन्यत्र हटा ले गये। अर्जुन और अश्वत्थामा का भयंकर युद्ध हुआ। अर्जुन के बाण से व्याकुल हो बैठक में धम्म से बैठ गया और मूर्च्छित हो गया। सारथि उसे रणभूमि से दूर हटा ले गया। अब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—अब संशप्तकों की ओर चलिये। श्रीकृष्ण चल दिये। श्रीकृष्ण अर्जुन को दुर्योधन और कर्ण के पराक्रम का वर्णन करके कर्ण को मारने के लिये अर्जुन को उत्साहित करना तथा भीमसेन के दुष्कर पराक्रम का वर्णन करना आरम्भ हुआ। उस समय अर्जुन ने अपने बाणों से दुर्योधन की चतुरङ्गिणी सेना का संहार कर डाला।

इस युद्ध में कर्ण ने शिखण्डी को पराजित कर दिया। धृष्टद्युम्न के साथ दुःशासन का युद्ध होने लगा और वृषसेन का नकुल के साथ युद्ध होने लगा। सहदेव ने उलूक की तथा सात्यकि द्वारा शकुनि को परास्त किया गया। कृपाचार्य से युधामन्यु की एवं कृतवर्मा से उत्तमौजा की पराजय तथा भीमसेन से दुर्योधन की पराजय हाथियों की सेना का संहार कर डाला गया और वह सेना पलायन कर गयी। इतने में कौरव सैनिकों द्वारा युधिष्ठिर पर आक्रमण कर दिया गया। उसी समय दुर्योधन और भीम एक दूसरे से जूझने लगे। कर्ण के बाणों से पीड़ित हुये पाण्डव योद्धा युद्धस्थल में कर्ण को असह्य देखकर भीमसेन के पास चले आये। कर्ण ने एकमात्र रथ के द्वारा ही युधिष्ठिर पर धावा किया वे कर्ण के बाणों से क्षत-विक्षत होकर अचेत से हो रहे थे और नकुल सहदेव बीच में होकर

धीरे-धीरे छावनी की ओर जा रहे थे। नकुल सहदेव राजा युधिष्ठिर के चक्र रक्षक थे। वे दोनों कर्ण की ओर दौड़े कही वह युधिष्ठिर का वध न कर दे। भयंकर युद्ध हुआ उसमें नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर कर्ण से पराजित हो गये। लेकिन युधिष्ठिर के कहने से नकुल और सहदेव दूसरे रथ पर बैठ भीम की सहायता करने उनके सैनिकों के साथ होकर युद्ध करने लगे।

इतने में ही अश्वत्थामा वहां आ पहुँचा जहां अर्जुन खड़ा युद्ध कर रहा था। अश्वत्थामा को अजुन ने आगे बढ़ने से तत्काल रोक दिया। तब क्रोध में भरे द्रोण पुत्र अश्वत्थामा ने अर्जुन और श्रीकृष्ण पर इतने बाण चलाये कि वे ढँक गये अर्जुन ने दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया, अश्वत्थामा ने उनका निवारण कर दिया। श्रीकृष्ण की दाहिनी भुजा में तीन बाण मारे। उस घमासान युद्ध में मर्यादा नहीं रही थी। कर्ण की सेना भाग निकली, कण की एक बात उसने नहीं सुनी। कर्ण ने अपने सारथि शल्य से कहा कि आज मैं अकेला ही युद्ध करूँगा। यह कहते हुये उसने भार्गवास्त्र का प्रयोग किया। पाञ्चालों का भयानक हा हाकार सब ओर गूज उठा। वे प्राय: मूर्छित होकर पड़े थे। अर्जुन ने उस समय श्रीकृष्ण से कहा—श्रीकृष्ण कर्ण मेरी ओर ही आ रहा है। मैं उसके सामने कोई कायरों जैसा काम करना नहीं चाहता। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि पहिले तुम युधिष्ठिर को देखो, उन्हें धीरज बँधाओ। बाद में कर्ण का वध करना। अर्जुन युधिष्ठिर से मिलने चल दिये। उस समय युद्ध का भार भीम को सोंपकर अर्जुन गये थे। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने धर्मराज के दर्शन कर उनके चरणों में वन्दन किया। धर्मराज ने उन दोनों का स्वागत किया। उन्हें यह विश्वास हो रहा था कि अर्जुन से कर्ण वध हो गया है।

युधिष्ठिर ने कहा देवकीनन्दन ! कर्ण शत्रुपक्ष में कवच का काम कर रहा था वृषसेन और सुषेण जैसे धनुर्धर उसके रक्षक थे, बड़ा तेजस्वी था। आप लोग उसे मारकर यहाँ आ गये, यह सौभाग्य की बात है। उसने मेरे ध्वज को काटकर पार्श्वरक्षकों को मार डाला। उसने मुझे बहुत अपमानित किया। मैं केवल भीम के कारण ही जीवित हूँ। मैं उससे अत्यन्त भयभीत हूँ। उसने मुझे क्षत-विक्षत कर डाला है। वह कैसे मारा गया, मुझे शीघ्र बताओ। अर्जुन ने कहा—राजन् ! मैं संशप्तकों से युद्ध कर रहा था। उसी समय अश्वत्थामा मेरे सामने आ गया। मैंने उसकी सेना के पाँच सौ बीरों का वध करके अश्वत्थामा पर आक्रमण किया। उसी समय कर्ण भी आ गया। उसे देखकर पाञ्चाल सैनिक और प्रभद्रकगण भारी संकट में पड़ गये। कर्ण ने उन सात सौ रथियों को तत्काल मृत्युलोक में भेज दिया। राजन् ! आज मैं सात्यकि, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, उत्तमौजा को साथ लेकर कर्ण के साथ ऐसा युद्ध करूँगा जैसा इन्द्र ने वृत्रासुर के साथ किया था। यदि मैं आज युद्ध में कर्ण को न मार सका तो प्रतिज्ञा करके पालन न करने वाले को जो पाप लगता है वह मुझ को लगे। मैं आपसे आशीर्वाद और आज्ञा चाहता हूँ। (क्रमशः)

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नित्यम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वमल्पो जनो जल्पति साट्टहासम्॥

ऊपर तक पूरा भरा घड़ा आवाज नहीं करता है। आधा भरा घड़ा प्राय: आवाज करता है। विद्वान् और अच्छे कुल में उत्पन्न व्यक्ति गर्व नहीं करता है। अल्पज्ञ जन ही बड़े जोर से हँसता और अन्ट-सन्ट बकता है। विद्वान् और मूर्ख में यही अन्तर होता है।

गतांक से आगे—

मुण्डकोपनिषद्

●

अथ तृतीयमुण्डकः (अथ द्वितीयखण्डः)

जिस परब्रह्म में सम्पूर्ण जड़चेतनात्मक जगत् स्थित या समर्पित है और जो स्वयं निर्मल स्वप्रकाश शुद्ध रूप से प्रकाशित होता है। इस पूर्वोक्त लक्षण वाला, समस्त कामनाओं का धाम, सबसे उत्कृष्ट परब्रह्म नारायण को वह पूर्व प्रकृत आत्मज्ञानी भागवत जानता है। जो प्रज्ञाशाली कामना रहित मुमुक्षु पुरुष आत्मज्ञानी महात्मा को परमात्मा के समान उपासना करते हैं वे बुद्धिमान् लोग इस शुक्र धातु को (वीर्य को) अतिक्रमण कर जाते हैं अर्थात् जन्म शून्य हो जाते हैं ॥१॥

जो पुरुष देवत्व मनुष्यत्व आदि काम्य भोगों को भोग्यतया आदर करता हुआ उन विषयों की चाहना करता है, वह कामकामीरूपी पुरुष देवत्व मनुष्यत्व आदि कामनाओंके कारण मरने के बाद देव मनुष्य आदि रूप से उत्पन्न होता है किन्तु परिपूर्ण ब्रह्म में कामना वाले, विदितात्मतत्व वाले पुरुष की समस्त कामनायें (आशायें) इस जन्म में ही सर्वथा लुप्त हो जाती हैं, इससे जन्मान्तर प्रसक्ति नहीं होती है ॥२॥

यह परब्रह्म परमात्मा [नारायण] केवल श्रवण मनन निदिध्यासन से नहीं मिल सकता है, न बहुत सुनने से ही प्राप्त होने योग्य है। यह परमात्मा जिस उपासक को स्वीकार कर लेता है, उस उपासक से निश्चय ही प्राप्त होने योग्य है, यह परमात्मा उस उपासक के लिये अपने स्वरूप को प्रकाशित करता है। परब्रह्म प्रियतम को ही स्वीकार करता है, जिसे परमात्मा निरतिशय प्रिय है वही परमात्मा को प्रियतम है ॥ ३ ॥

यह परमात्मा अवसन्न मन से या उपासनारूप बल से रहित पुरुष से नहीं प्राप्त होने योग्य है और स्त्री, पुत्र, धन आदिक विषयों की आसक्ति के कारण अनवहित चित्तता से अथवा शिखा, यज्ञोपवीत, त्रिदण्ड, काषायवस्त्र आदि लक्षणों से, संन्यास से भी नहीं प्राप्त होने योग्य है किन्तु जो विवेकी-पुरुष इन उपासनारूप बल तथा अप्रमाद और संन्यासादि उपायों से परब्रह्म को प्राप्त करने के लिये यत्न करता है उस उपासक को यह जीवात्मा प्राप्य स्थान परब्रह्म नारायण को प्राप्त कर लेता है ॥४॥

तत्वदर्शी ऋषिलोग इस परमात्मा को जीवदशा में ही अनुभव करके उस अनुभव के ज्ञान से सन्तुष्ट लब्ध-आत्म-सत्ता वाले विषय की आशा रहित निगृहीतेन्द्रिय परम शान्त हो जाते हैं। विवेवे की उपासक सर्वदेशावच्छेद से भीतर और बाहर सर्ववस्तुगत परमात्मा को प्राप्य देशविशेष विशिष्ट पाकर आविर्भूत बाह्यरूपी विशिष्ट आत्मा वाले धीर महात्मा निश्चय ही सर्वपदवाच्य परब्रह्म नारायण को अनुभव करते हैं ॥ ५ ॥

वेदों का अन्त वेदान्त, अथवा वेदों का अन्तिम सिद्धान्त रूप होने से उपनिषदों को वेदान्त कहा जाता है जिन्होंने वेदान्त के श्रवण जन्यज्ञान से परमात्मा को भलीभांति जान लिया है तथा काम्यकर्मों के त्यागरूप योग से जिनका अन्तःकरण शुद्ध हो गया है, वे जितेन्द्रिय ब्रह्मस्वरूपी लोक में रहते हुये, यती या संन्यासी लोग तो चरम देह अवसान समय में सर्वोत्कृष्ट परब्रह्म नारायण की प्रसन्नता से समस्त संसार के बन्धनों से सम्यक् प्रकार से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं।

देह को बनाने वाली कलाएं अपनी-अपनी प्रकृति में संश्लेष युक्त हो जाती हैं और सम्पूर्ण नेत्र आदिक इन्द्रियाँ अपने-अपने अधिष्ठाता आदित्यादि देवताओं में संसर्ग विशेष को प्राप्त होती हैं तथा अदत्त फल समस्त कर्म और विज्ञानमय जीवात्मा ये सबके सब सबसे उत्कृष्ट पर अविनाशी परब्रह्म नारायण में लीन हो जाते हैं ।। ७ ।।

जैसे अपनी उत्पत्ति स्थान से बहती हुई गंगा यमुना आदि नदियाँ गंगा या यमुना आदिक नाम को एवं शुक्ल, कृष्ण आदिक रूप को छोड़कर समुद्र में अदृश्य हो जाती हैं। वैसे ही ज्ञानी महात्मा नाम-रूप से विमुक्त हुआ अर्थात् त्यागकर ब्रह्मादि से परम श्रेष्ठ दिव्य पुरुष परब्रह्म नारायण को प्राप्तकर लेता है ।। ८ ।।

जो भगवान का उपासक निश्चय ही प्रसिद्ध उस सबसे श्रेष्ठ परब्रह्म नारायण को उपासना से जानता है; वह भगवद् उपासक ब्रह्म के समान भलीभांति हो जाता है। इस भगवदुपासक के कुल में परब्रह्म परमात्मा को न जानने वाला नहीं होता है। शोक को पार हो जाता है। सब पापों के पार हो जाता है। हृदयरूप गुफा में गांठ के समान दुर्मोच राग द्वेष आदिक से सर्वथा रहित हुआ आविर्भूतगुणाष्टक अमर हो जाता है अर्थात् जन्म मरण से रहित हो जाता है ।। ९ ।।

वह यह विद्या संप्रदान के विधान आगे के ऋग्वेद के मन्त्र से भलीभांति कहा गया है, जो निष्काम भाव से नित्य नैमित्तिक कर्म करने वाला वेदाध्ययन परायण और परब्रह्म को जाननेकी इच्छा वाला श्रद्धावान् स्वयं अपने से एकर्षि नामक प्रज्वलित अग्नि को शास्त्रविधि से आहुति देते हैं और जिन्होंने शास्त्रोक्त विधि से मस्तक पर अंगार पात्र को धारण करना रूप अथर्ववेदीय वेदव्रत (शिरोव्रत) को अनुष्ठान किया, उन्हीं से निश्चय ही इस ब्रह्मविद्या को वेदविद्याका उपदेश करे ।।१०।।

इस अक्षर पुरुष रूप सत्य वेदविद्या को पूर्वकाल में अङ्गिरा ऋषि ने अपने पास विधि पूर्वक आये हुए प्रश्नकर्ता मुमुक्षु शौनक ऋषि से कहा था, कि जिसने शास्त्रानुसार शिरोव्रत का आचरण न किया हो, इस ग्रन्थरूप मुण्डक रहस्य को वह नहीं पढ़ सकता है। यह ब्रह्मविद्या जिन्हें ब्रह्मा आदि की परम्परा से प्राप्त है, उन परम ऋषियों के लिये नमस्कार है। ब्रह्मा, अथर्वा, अङ्गिर, सत्यवाह, अङ्गिरा, आदिक परम ऋषियों को साष्टाङ्ग प्रणाम है। नमः परमऋषिभ्यो ।।११।।

इति तृतीयमुण्डके द्वितीय खण्डः इति तृतीय मुण्डकः

इति मुण्डकोपनिषत्समाप्ता

—पं० केशवदेव शास्त्री

प्रगट भये यतिराज (भजन)

श्रीभूतपुरी में प्रगट भये यतिराज जी ।। टेक ।।
श्री अनन्त प्रथमावतार हैं, दूजा लक्ष्मण राज ।
द्वापर में बलराम भये हैं कलि में श्री यतिराज जी ।।१।।
आदि देव श्रीमन्नारायण, कहे शेषजी जाओ ।
मृत्युलोक में जाय सभी को शरणागत कर लावो जी ।।२।।
आदि शेष आज्ञा को पाये मृत्युलोक में आये ।
भूतपुरी में जन्म लिये हैं, आश्रित जन सुख पाये जी , ३।।
श्री आर्द्रा नक्षत्र धन्य है, शोभा वरणि न जाय ।
होत अति आनन्द जगत में, तीन लोक के मांय जी ।।४।।
कान्तिमती केशव सुत प्रगटे, स्वामी श्री मन्नाथ ।
आश्रित को वैकुठ पठाये, मन्त्रत्रय के साथ जी ।।५।।
सव ही वैभव संग लेय मुनि, रंग नगर में आये देख ।
आनन्द श्रीरंगनाथ जी, गोदा सह हर्षाये जी ।।६।।
द्रविड़ देश में रहकर प्रभुजी, लीला बहुत दिखाये ।
वाक्य बहत्तर आज्ञा करके, श्रीवैकुण्ठ सिधाये जी ।।७।।
श्रीवैष्णव को दास गात जस, चरण कमल के काज ।
पत राखो शरणे आया की, जयति जयति यतिराज जी ।।८।

'परहित सरस धर्म नहीं भाई'

महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व में आता है कि जब देवदूत युधिष्ठिर को नरकों के रास्ते पर ले गये, तब नारकीय जीव कहने लगे कि महाराज युधिष्ठिर ! आप ठहरो, आपकी हवा लगने से हमारे को शान्ति मिलती है। यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि हम तो यहीं ठहरेंगे। जहां हड्डी मांस, मल, मूत्र आदि बिखरा पड़ा है और महान् दुर्गन्ध आ रही है. ऐसी गन्दी जगह होने पर भी वे कहते हैं कि हम तो यहीं ठहरेंगे, क्योंकि हमारे ठहरने से इनको सुख मिल रहा है ! तात्पर्य है कि जो अच्छे पुरुष होते हैं, वे अपना सुख नहीं देखते। अपना सुख तो पशु ही देखते हैं। सूअर, कुत्ता, ऊँट गधा भी अपना सुख देखता है। वही अगर मनुष्य भी देखने लगे तो मनुष्यता क्या हुई ?

भगवान् ने मनुष्य को सेवा करने का अधिकार दिया है। अतः तन से, मन से वचन से दूसरों की सेवा करो। अपने पास में जो कुछ है, उसी से सेवा करो। कोई पूछे तो रास्ता बता दो, प्यार से उत्तर दे दो। जल पिला दो। हमें तो सबको सुख ही पहुँचाना है। आपके हृदय में दूसरों को सुख पहुँचाने का भाव होगा, तो परिचित और अपरिचित, सबको प्रसन्नता होगी। आपके दर्शन से दुनिया को शान्ति मिलेगी। कितनी उत्तम बात है ! कुछ भी न कर सको तो बैठे बैठे मन में विचार करो कि सब सुखी कैसे हो जायँ ? सब भगवान् के भक्त कैसे हो जायँ ? भगवान् से कहो कि हे नाथ ! सब आपके भक्त हो जायँ; सब आपके भजन में लग जायँ; सब सत्संग में लग जायँ; ऐसा विचारने से भगवान प्रसन्न होते हैं और सबके कष्ट दूर होते हैं। परहित ही श्रेष्ठ धर्म है।

प्रस्तुति – सुश्री मीनाक्षी पाण्डेय

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
॥ श्रीवादिभीकरमहागुरवे नमः ॥

श्रीमद् अनन्त–चालीसा

★

॥ दोहा ॥

भाष्यकार भगवान, श्रीरामानुज यतिराज।
श्रीयतीन्द्र वरवर मुनि स्वामीजी महाराज॥
श्रीवादिभीकरमहा, गुरु आद्य आचार्य।
जगद्गुरू आचार्यश्री जयति अनन्ताचार्य॥

चौपाई

श्रीयतिवर रामानुज ध्याऊँ। श्रीवरवर मुनि शीश झुकाऊँ॥
श्रीगुरु-परम्परा कर ध्याना। श्रीअनन्त शुभ सुयश बखाना॥
चौहत्तर पीठ परिगणित नामी। श्रीमुडुनाम्बि अण्णा स्वामी॥
श्रीवरवर मुनि के मन भाये। आद्य वादिभीकर कहलाये॥
वरवर-मुनि स्वामी संस्थापित। हुये अष्ट दिग्गज जब स्थापित॥
उनको दिग्गज एक बनाया। विरुद वादिभीकर तब पाहा॥
वादि में प्रतिवादि भयङ्कर। श्रीवैष्णव गोष्ठी में किङ्कर॥
विमल वंश श्रीवत्स कुलीना। वेद - शास्त्र - इतिहास प्रवीणा॥
विद्वत् परम्परा यह भारी। धर्माचार्य हुये अवतारी॥
धर्म प्रचार किया अति व्यापक। पुष्कर दिव्यदेश संस्थापक॥
श्रीअनन्त महाराज कहाये। दक्षिण से उत्तर में आये॥
मारवाड़ मरुधर में आकर। श्रीवैष्णव जन शिष्य बनाकर॥
किया अवैदिक मत का खण्डन। सम्प्रदाय श्रीवैष्णव मण्डन॥
रामानुज मत किया प्रचारित। वेद शास्त्र इतिहास प्रमाणित॥
उत्तर में जो प्रथम कहाया। पुष्कर दिव्य देश बनवाया॥
पौत्र हुये उनके श्रीनामी। गादि अनन्ताचार्य स्वामी॥
कुंभे स्वाति दिन अवतारी। श्रीअनन्त स्वामी तपधारी॥
जय अनन्त स्वामी सुख सागर। विद्या वैभव धर्म दिवाकर॥
सकल शास्त्र गुण ज्ञान प्रभाकर। भक्ति ज्ञान वैराग्य विभाकर॥
तिरुपति रङ्गाचार्य सुनामा। श्रीअनन्त स्वामी के मामा।
सकल शास्त्र के महान पण्डित। विद्वानों से महिमा मण्डित॥
ज्ञान शास्त्र सब वह समझाया। विद्या वैभव उनसे पाया॥

तिरुपति से काञ्ची गृह आये। जगद्गुरु स्वामी कहलाये ॥
अद्भुत वक्ता लेखक नामी। चौदह भाषाविद् थे स्वामी ॥
यंत्र सुदर्शन प्रेस लगाया। ग्रन्थों का मुद्रण करवाया ॥
हयग्रीव सब विद्या दाता। चक्र सुदर्शन शक्ति प्रदाता ॥
दोनों ने अनुकम्पा कीन्ही। विद्या ज्ञान शक्ति सब दीन्ही ॥
विद्या शक्ति प्राप्त कर भारी। यात्रा की कीन्ही तैयारी ॥
हाथी घोड़े शिविका सवारी। धर्म विजय यात्रा की भारी ॥
परिक्रमा भारत की कीन्हीं। शिक्षा धर्म ज्ञान की दीन्ही ॥
धार्मिक भाव सभी में भरके। श्रीवैष्णव सम्मेलन करके ॥
भाषण सुने जगत हर्षाया। दिव्य ज्ञान जग में फैलाया ॥
विजय ध्वजा चहुँ दिशि फहराई। शास्त्र विजय काशी में पाई ॥
विद्या के थे सूर्य प्रकाशित। राज्य प्रजा सबसे सम्मानित ॥
देवस्थान विशाल बनाया। दिव्यदेश मन्दिर कहलाया ॥
पूर्ण कृपा बम्बई पर कीन्ही। बम्बई को तिरुपति कर दीन्ही ॥
रोल ग्राम भी धन्य कहाया। दिव्यदेश मन्दिर बनवाया ॥
कार्यक्षेत्र था भारत सारा। किया धर्म का पूर्ण प्रचारा ॥
जय जय जगद्गुरु महाराजा। सफल करो भक्तन के काजा ॥
पाठ करें जो यह शत बारा। श्री समृद्ध सुखी परिवारा ॥
जो अनन्त चालीसा गाये। श्रीआचार्य कृपा वह पाये ॥

दोहा

धर्माचार्य महान थे, ज्ञान भक्ति गुणवान।
गौरव भारतवर्ष के अद्वितीय विद्वान ॥
श्रीअनन्त स्वामी हुये श्रीअनन्त अवतार।
करने आये जगत में जीवों का उद्धार ॥
श्रीवादिभीकर गुरु जगद्गुरु आचार्य।
विद्वानों में सूर्य थे गादि अनन्ताचार्य ॥
राज्य प्रजा सबने किया उनका अति सम्मान।
दास गदाधर ने किया विमल सुयश गुणगान ॥

॥ श्रीमद् अनन्त चालीसा समाप्त ॥

॥ श्रीमद् जगद्गुरु अनन्ताचार्य स्वामीजी महाराज की जय ॥

रचयिता—गदाधर पारीक, बम्बई

राम कथा सभी वर्गों का एक मिलन मंच

[श्रीकालोचरन दीक्षित "कवीश" सा० विशारद ज्यो०रत्न शाहजहांपुर]

मनोऽभिरामं नयनाभिरामं, वचोऽभिरामं श्रवणाभिरामम् ।
सदाभिरामं सतताभिरामं, वन्दे सदा दाशरथिं च रामम् ॥
(आनन्द रा० सा० कांड महर्षि वाल्मीकि)

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥
(तुलसीकृत रामचरित मानस ५-२)

विश्व-गगन का स्पर्श करने वाली तुलसीदास जी की कीर्ति-वैजयन्ती का आधार स्तम्भ रामचरित मानस है, जिसमें सभी वर्गों का एक मिलन मंच है । इस युग के काव्यकारों में विश्व कवि संतप्रवर भक्ताग्रगण्य तुलसी का नाम और उनका रामचरितमानस सर्वोपरि है । भारतीय संस्कृति में राम-कथा सर्वत्र परिव्याप्त है । धैर्य मर्यादा और आदर्श के साकार विग्रह लोकनायक श्रीराम भारतीयों के लिये राष्ट्र संकट, धर्म संकट के समय महत् सम्बल रहे । उनकी कथा भी आदि कवि क्रान्तदर्शी आप्तपुरुष महर्षि वाल्मीकि एवं युगपुरुष दिव्य महामानव, अप्रतिम महाकवि वेदव्यास एवं तुलसीदास तक तथा अन्यान्य लेखकों कवियों द्वारा वर्णित की जा रही है और कक्षा पांच के छात्रों से लेकर एम० ए०-पोस्ट ग्रेजुएट कक्षा के छात्रों तक को पढ़ाई जा रही है रामायण रामकथा पर अनेकों देश विदेश के विद्वानों ने शोध किया, पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है और आज भी विश्व में श्रद्धा के साथ रामकथा पढ़ी जाती है, कथा वाचकों द्वारा रामकथा सुनाकर श्रोताओं को आनन्द रसाप्लावित किया जा रहा है देश-विदेश की अनेकों भाषाओं में रामकथा लिखी गई तथा आदि महाकाव्य रामायण का तथा रामचरितमानसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है जिससे इस कथा की लोकप्रियता दृष्टिगत हो रही है, प्रेरक शिक्षाप्रद सार्वदेशीय, सार्वयुगीन एवं कर्म-भक्ति-ज्ञान की त्रिवेणी बहाने वाली श्रीरामकथा है ।

समाज में आश्रमानुसार वर्णानुसार विभिन्न वर्गों में ब्रह्मचारी छात्र, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यासी राजा-प्रजा, शासक, शासित, विद्वान, अल्पज्ञ, देव, नर, राक्षस, सात्विक राजसिक तामसिक तथा समाजवादी, अर्थवादी, अध्यात्मवादी, धनिक निर्धन सभी वर्गों की स्थिति रामकथा (मानस) रामायण में समुपलब्ध होती है ।

रामावतार महदुद्देश्य के लिये हुआ था वह था । कुटिलाचारी, अनाचारी, अत्याचारी राक्षसों से सदाचारियों सज्जनों की रक्षा करना और अत्याचार, अनाचार का विनाश करना दुष्टों का दमन करना लोकोपकार करना, मर्यादा स्थापित करना, मानवोंको सुन्दर प्रेरणा देकरक र्तव्यबोध कराना ।

श्रीराम ने वनवासी गिरिवासी जनों से भी सम्पर्क कर उनके कष्टों का निराकरण किया राजा प्रजा में मधुरातिमधुर सम्बन्ध स्थापित किये परमादर्श राज्य बनाया आज भी रामराज्य के

गुणगान किये जाते हैं, श्रीराम ने प्रजारंजन, प्रजारक्षण दोनों कार्य किये। रामकथा के वैविध्यपूर्ण मार्मिक प्रेरक कल्याणप्रद कर्तव्य, भावना, प्रेम भावना युक्त प्रसंग हैं, वैसे प्रसंग अन्यत्र दुर्लभ हैं। राम का सभी वर्गों के लोगों से सम्पर्क हुआ।

श्रीरामभक्ति अखिल जगत्पावनी है। ऊँच नीच का वहां भेदभाव नहीं है। रामकथामें रामचरित मानस में सर्वोदय का सुन्दर आदर्श है। प्राणिमात्र के दुःख निवारण के लिये अपना स्वार्थ त्यागना पड़ता है। रामकथाकार युगपुरुष विश्वकवि तुलसी ने अपने ग्रन्थ में साहित्यकि और श्रेष्ठव्यक्ति कौन होता है का मूल्यांकनकरते हुए वर्णनकिया कि व्यक्ति वह उत्तम होना है जिसका धन-वैभव, विद्या, यश बल सबके कल्याण के लिये हो, परोपकार के लिये हो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" समाज वही श्रेष्ठ है जहाँ ऐसे परोपकारी व्यक्ति हों और साहित्य वह श्रेष्ठ माना जाता है जो सबके लिये लाभकारी हो सबके लिये ग्राह्य हो प्राप्य हो, जैसे गंगाजी सबके लिये समान प्राप्य और हितकर हैं।

कीरति भनित, भूतिभल सोई। सुर सरि सम सब कहँ हित होई।। रामराज्य में सर्वोदय का हित चमकता है तुलसी का मानस और गंगा सर्वोदय की प्रतीक हैं। सर्वोदय में वर्गों की परस्पर घृणा कलह, वर्ग संघर्ष की कल्पना नहीं है रामराज्य में सबको अपने-अपने स्थान पर पूर्ण विकास का अवसर प्राप्त होता है सभी मानवों में समता का दर्शन है समदर्शी का भाव है यही सर्वोदय के सिद्धान्त हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को निषाद भी भरत सदृश प्रिय हैं और शबरी, अम्बा, कौशल्या की भाँति पूज्या हैं। गीधराज को भी राम पिता के तुल्य मान सम्मान देते हैं। प्रजा में विषमता होने पर भी दुष्प्रभाव नहीं, राम के प्रभाव से विषमता भी दूर हो गई। परस्पर सभी व्यक्तियों में प्रेम है यथा—

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। मानस में प्रेम कर्त्तव्य पालन परोपकार समाज के प्रति समभाव होने से वहां सभी वर्गों का एक मिलन मंच है। मनोवैज्ञानिक आयाम सांस्कृतिक, मूल्यांकन, भावात्मक एकता, आदर्श चरित्रता, जनोपयोगी सत्साहित्य आदि विशेषताओं की झलक है। सभी सदाचारी हैं। सर्वोदय की भावना व्यक्ति समाज और साहित्य को उजागर करती है, श्रेयस्कर होती है जैसे गंगा जनकल्याणकारी सकल जन रंजिनी है थलचर नभचर जलचर, पशुपक्षी, कीट, पतंग, सज्जन, दुर्जन, गृहस्थ, विरक्त, बलवान, निर्बल, दीनहीन, स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध, देव, नर सभी का परिचालन गङ्गा समान रूप से करती हैं। गङ्गा सर्व सुलभ सर्वहित-कारिणी तो है किन्तु अपनी-अपनी शक्ति क्षमता के अनुरूप ही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं जैसे बाल-वृद्ध गंगा के तट पर उथले जल में स्नान करते हैं, रोगी गंगा के किनारे बैठकर गंगाजल से आचमन कर सन्तुष्ट हो जाते हैं किन्तु बलवान तैराक गंगा जल की धार में आरपार तरते हुये स्नान करते हुए आनन्दित होते हैं। किसी ने शीशी में गंगाजल लिया, किसी ने लोटे में जल लेकर घर गया, कोई बड़े कनस्तर बाल्टी में गंगा जल भरकर ले गया अतः जितनी पात्र में क्षमता हुई शक्ति के अनुसार गंगा का प्रयोग किया और गंगाजल प्राप्त किया, गंगा तो सबके लिये समान हैं, किन्तु पात्र की क्षमता और अपनी शक्ति के अनुसार लोग गंगा से लाभ उठा रहे हैं। गंगा में भेद भाव नहीं वे सबके लिये समान हैं सर्वोदयका प्रतीक हैं, जल तो जितना बड़ा पात्र व्यक्ति ले गया उतना प्राप्त किया जैसे योग्य अध्यापक के लिये सब शिष्य समान हैं सभी से वह प्रेम हित का भाव रखता है परन्तु व्यवहार में शिष्यों की आयु रुचि क्षमता ग्रहणशक्ति के आधार पर पृथक-पृथक पद्धति से शिक्षा देता है। श्रीरामचरितमानस में श्रीगोस्वामीजी ने सभी के हितकारी पक्षों को प्रस्तुत किया है।

[सावशेष]

वार्षिक भविष्य सम्वत् २०५२ वि०

(लेखक—परम्परागत राज्य ज्योतिषी पं० श्रीगदाधर पारीक, बम्बई)

ज्योतिषशास्त्र भूत, भविष्य, वर्तमान की जानकारी प्राप्त कराने का शास्त्रीय विज्ञान है। जिसका आधार है वेद। ज्योतिष वेद भगवान्‌का नेत्र है। प्रतिवर्ष ग्रहगोचर स्थिति को प्रदर्शित करने के माध्यम का नाम पञ्चाग है। जिसमें तिथि वार नक्षत्र योग और करण के अतिरिक्त ग्रह गोचर की भी जानकारी रहती है। जिसको देखकर वैयक्तिक और भेदनिय भविष्य फल कहा जाता है। सर्वधारी नाम का विक्रम सम्वत् २०५२ का वार्षिक भविष्य निम्नलिखित है।

ग्रहमन्त्री परिषद् में वर्ष का अधिपति शनिदेव है और प्रधानमन्त्री का पद शुक्र ने ग्रहण किया है। अन्यमन्त्री सौम्यग्रह चन्द्रमा और दुर्गाधिपति रक्षाविभाग गुरुदेव के हाथ में है। वित्तमन्त्रालय का अधिपति भगवान् श्रीसूर्यनारायण एवं रसरसायन स्वामी बुध, द्वितीय धान्येश मन्त्री शनि जलाधिपति सूर्य, एवं फल और जल विभाग गुरुदेव के पास में है। इस ग्रहमन्त्री मण्डल के अनुसार देश की आर्थिक प्रगति अच्छी होगी। नवीन उद्योग-व्यापार कार्यों का विस्तार होगा। व्यापारी वर्ग के लिए समय अच्छा जायेगा। प्रचुर मात्रा में जल वर्षा होने से अन्नोत्पादन यथेष्ट रूप से होगा। नदियों में बाढ़, पृथ्वी कम्पन, दैविक उपद्रव, संक्रामक व्याधियों का प्रसार, आदि का समय-समय पर अनेक स्थानों पर होने की सम्भावना है।

शनिदेव का सुदृढ़ नेतृत्व और कूटनीति प्रधान शुक्र के मन्त्रीत्व के कारण से राष्ट्र की एकता और अखण्डता की शक्ति का विकास होकर सुदृढ़ राष्ट्र शक्ति का विकास होगा। अनेकों प्रान्तों में व्याप्त अस्थिरता और उपद्रव समाप्त हो जायेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विघटनकारी उपद्रवी षड्यन्त्रकारियों को अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्राप्त षडयन्त्रों का भण्डाफोड़ होगा। राजनैतिक पक्षों में व्याप्त पारस्परिकविवाद समय-समय पर घटते बढ़ते रहेंगे। भ्रष्टाचार में निरन्तर वृद्धि, स्वयं के स्वार्थ के लिए राष्ट्र की हानि, परस्पर विश्वासघात आदि राष्ट्र विरोधी हरकतें बढ़ेंगी। लेकिन राष्ट्र के नागरिकों में देश प्रेम, जागरूकता के कारण से ऐसी घटनाओं में कमी भी आयेगी।

मेष—वर्ष का आरम्भ सामान्य रहेगा। वर्तमान में जिस क्रम से जीवन चल रहा है तीन मास तक उसमें कुछ परिवर्तन की सम्भावना नहीं है। श्रावण से आर्थिक परिवर्तन का योग है। आर्थिक आय के स्रोत विस्तृत होंगे। उद्योग व्यापार में वृद्धि योग हैं एवं सेवावृत्ति लोगों के लिए पदवृद्धि होगी। परिवार में शुभ कार्य धार्मिक स्थानों की यात्रा का योग है। वर्ष के प्रारम्भ से छः मास के बाद का समय श्रेष्ठफल दायक है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्त्री स्वास्थ्य में सामान्य विकार विनियोजन किये गये धन में वृद्धि और उससे लाभ मिलेगा। पारिवारिक सुख सुविधा के साधन, आवास एवं फर्नीचर आदि उपकरण आभूषण आदि में अर्थ का व्यय होगा। वर्षान्त के तीन मास

सूखपूर्ण व्यतीत होंगे। सोचे हुए कार्य बन जाने से मनमें प्रसन्नता बढ़ेगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता मिटेगी। परीक्षा में सफलता और नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। श्रीगणेशजी की आराधना करें, गौ-माता को चारा डालें।

वृष—वर्ष के आरम्भ में आपकी राशि के लिए शुक्र-शनि युति श्रेष्ठ है। "शुक्र शनि के साथ कार्य सब सफल बनाये।" के अनुसार यह वर्ष आपके लिये अच्छा जायेगा। अर्थलाभ होगा। पदवृद्धि का योग है। वेतन वृद्धि और इन्वेस्टमेण्ट की गई रकम से अच्छी आय होगी। सार्वजनिक सामाजिक कार्यों में यश सम्मान की वृद्धि एवं राजकीय कार्यों में सफलता के योग हैं। समय-समय पर स्वयं स्त्री और परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता भी हो सकती है। यात्रा में कष्ट होगा। अनावश्यक कार्यों में अर्थ का व्यय हो सकता है। आर्थिक लाभ के लिए किये गये नवीन कार्यों में प्रथम आय मन्दगति से होगी। अपरिचित व्यक्तियों से धन हानि और किसी अपरिचित व्यक्ति को दी गई रकम के बारे में विवाद हो सकता है, श्रीगोपालसहस्रनाम का पाठ करें।

मिथुन—मिथुन राशि के लिए वर्ष सुखमय जायेगा। मनोकामना सिद्ध सुयश सम्पत्ति पायेगा। स्वास्थ्य के लिए अनुकूल, शत्रुपक्ष के लिये प्रतिकूल, नौकरी के लिये श्रेष्ठ और विद्या प्राप्ति के लिये समय अच्छा है। सोचे गये कार्यों में अल्प परिश्रम से सफलता रोग निवृत्ति एवं तीर्थयात्रा का योग है। परिवार में सम्पत्ति की वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति होगी। स्वयं के द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों का सुअवसर आयेगा। लेन-देन के सम्बन्ध में सावधानी रखते हुए भी किसी निकट के व्यक्ति द्वारा आर्थिक हानि हो सकती है। उदर विकार, शिरशूल एवं कमर के नीचे के भाग घुटनों में दर्द आदि शारीरिक व्याधि का भी समय आयेगा। अनावश्यक मानसिक चिन्तायें बढ़ेगी, जिससे मनमें अशान्ति, पारिवारिक क्लेश. मनोविकार एवं उच्च रक्तचाप समय-समय पर अपना प्रभाव डालेंगे। श्वेत वस्तुयें एवं खनिज पदार्थ रंग रसायन सेयर्स और पूंजी विनियोजन व्यापार से लाभ मिलेगा। श्रीगणेशजी का नियमित पूजन करें। श्रीवेंकटेशजी की अर्चना करायें।

कर्क—राशि से पंचम गुरु शुभ फलदायक योग। दशम स्थान शनिदेव है बना अशुभ संजोग। ग्रह गोचर के आधार पर वर्ष का फल मिश्र फलदायक रहेगा। कभी आर्थिक लाभ प्रचुरता से होगा तो कभी आर्थिक प्राप्ति के लिये कठिन श्रम करने पर भी यथेष्ट लाभ का योग नहीं है। स्वास्थ्य के लिये भी यही स्थिति रहेगी। प्रारम्भ में स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। मध्य के चार मास स्वास्थ्य के लिये ठीक नहीं हैं। अन्तिम चार मास सामान्य स्वास्थ्य प्रद है। सर्दी जुकाम वक्ष उदर विकार होते रहेंगे। मानसिक चिन्ता अधिक रहेगी। वृथाभय मनोविकार एवं पत्नी पुत्रादिकों के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता और उनके स्वास्थ्य के लिये धन खर्च होगा। धार्मिक कार्य अनुष्ठान के लिए मन बनेगा लेकिन आलस्यवश समय पर नहीं होंगे। ऐसे ही तीर्थयात्राके लिये किया गया विचार ठीक समय पर स्थगित हो सकता है। स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद का हल होगा। श्रीविष्णु-सहस्रनाम का पाठ करें। शनिवार को हनुमानजी का भोग लगायें।

सिंह—सिंहराशि अति बलवती स्वामी सूर्य महान्। कभी रहे कमजोर यह कभी रहे बलवान्॥ इस राशि के लिए गोचर से चतुर्थ मित्र राशि का गुरु इस वर्ष में सुख स्थान में होने से अच्छा फल देगा और सूर्यपुत्र शनि शत्रु स्थान में स्थित होकर सप्तम-केन्द्र में होने के कारण से नेष्ठ खराब फल देने वाला है। गुरु एवं शनि दोनों का फल साथ-साथ में चलेगा। इसलिये स्वास्थ्य कभी

ठीक रहेगा कभी स्वास्थ्य में गिरावट का योग है। यही स्थिति पारिवारिक जनों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में रहेगी। विशेष पति के लिये पत्नी के स्वास्थ्य एवं पत्नी के लिये पति स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। नौकरी करने वालों के लिये उच्चाधिकारियोंकी नाराजगी एवं वेतन वृद्धि में रुकावट और व्यापारियों के लिये कई प्रकार के राजकीय झंझटों से परेशानी हो सकती है। छात्रों को परीक्षा में सफलता के लिये विशेष श्रम करना पड़ेगा एवं स्त्रियों के लिये गृहस्थ सम्बन्धी चिन्तायें बढ़ेंगी। वर्ष का अन्तिम समय अच्छा जायेगा। भगवान् सूर्यदेव को प्रतिदिन प्रातःकाल जल चढ़ावें, प्रार्थना करें। गुरुवार को भगवान् लक्ष्मीनारायण का पूजन करें, ब्राह्मण को दान दें, शनिवार को हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य करें, भोग लगावें।

कन्या—सोचे गये आर्थिक प्रगति के कार्यों में सफलता मिलेगी। वर्तमान उद्योग व्यापारिक कामों में प्रगति का योग है। इन्वेस्टमेन्ट शेयर्स आदि कार्यों में पूंजी का विनियोजन होगा। आर्थिक प्रगति के लिए यह वर्ष अच्छा जायेगा। सीमेन्ट, लोहा, कागज, रंग रसायन आदि वस्तुओं से लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य योग सामान्य है जिस प्रकार से स्वयं एवं परिजनों का स्वास्थ्य चल रहा है। वैसे ही कम ज्यादा चलता रहेगा। वैधानिक कार्यों में विजय होने से मनमें प्रसन्नता बढ़ेगी। नवीन स्थानों की यात्रा सपरिवार होने की सम्भावना है। पुत्र-पौत्रादि के विवाह कार्य में में धन का व्यय होगा। स्वयं का एवं स्त्री का स्वास्थ्य ठीक चलता रहेगा। पारवार में नये सदस्य का आगमन होगा। परीक्षा में सफलता मिलेगी। नौकरी वर्ग के लिये, उच्चाधिकारियों की कृपा और पदोन्नति का योग है। वर्ष गत वर्ष की अपेक्षा सभी के लिये अच्छा रहेगा। श्रीगोपालसहस्रनाम का पाठ करें।

तुला—तुलाराशि के लिये नहीं स्वास्थ्य कुछ अनुकूल है। यह वर्ष भी सामान्यतः कुछ कार्य में प्रतिकूल है।। वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। धार्मिक कार्य के लिये यात्रा होगी। प्रथम तीन मास में घर का धार्मिक वातावरण रहेगा। धार्मिक प्रवृत्ति, धार्मिक अनुष्ठान-कथा भागवत में अभिरुचि और उनमें धन का व्यय होगा। पूर्व विनियोजित पूंजी पर यथार्थ लाभ मिलने से आर्थिक वृद्धियोग है। नवीन पूंजी विनियोग से अल्प लाभ मिलेगा। स्वयं एवं स्त्री स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। पुत्र सन्तान से विवाद या उनसे मानसिक क्लेश का योग है। परिवार में वृद्धि का योग है। समाज में यश-सम्मान मिलेगा। नवीन कार्यों की और धन लगाने के लिये पारिवारिक जनों से प्रेरणा मिलेगी, जिसमें लाभ का योग है। घर में बहुमूल्य वस्तुओं का संग्रह बढ़ेगा। जमीन मकान आदि में भी पूंजी निवेश का योग है। किसी पूर्व कार्य में रुकी हुई रकम अचानक मिलेगी। श्रीवेंकटेशजी की अर्चना करें, श्रीकृष्णजी को मोदक भोग लगायें।

वृश्चिक—वृश्चिक राशि में अभी गुरुदेव का वास है। स्वास्थ्य अर्थ यश सम्पदा बढ़े धर्म विश्वास। वर्ष अच्छा जायेगा। व्यापार बढ़ेगा। नवीन व्यापार के प्रारम्भ का योग है। बड़े-बड़े व्यक्तियों से परिचय और सम्पर्क होगा। यश-सम्मान की प्राप्ति होगी। सन्तान सुख-स्त्री सुख और परिवार में प्रसन्नता बढ़ेगी। यात्रा से लाभ होगा। विचारों में धार्मिकता और आध्यात्म की ओर मन की प्रवृत्ति रहेगी। गृहस्थ सुख और गृहस्थ में सुख सुविधा उपकरणों की घर में वृद्धि होगी। सन्तान को परीक्षा में विशेष सफलता और उनके द्वारा किये गये व्यापार से लाभ मिलेगा। परिचित व्यक्तियों द्वारा आर्थिक हानि भी उठानी पड़ सकती है। ब्राह्मणों को दान दें, श्रीगणेश जी का पूजन करें, मोदक भोग लगायें।

धन—स्वयं के स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी जो औषधोपचार से फिर सामान्य स्थिति को प्राप्त होगी। धार्मिक समारोहों में सम्मिलित होने और धर्मकार्यों में धन का व्यय होगा। दान-पुण्य करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। किसी धार्मिक संस्था मठ-मन्दिरों में धन का सद्व्यय होगा। व्यापार व्यवसाय में स्थिति सामान्य रहेगी। अधिक परिश्रम करने पर भी लाभ कम मिलेगा। जिससे चिन्ता रहेगी। देश विदेश की यात्रा का योग है। परिवार के जनों और सम्बन्धियों से आर्थिक कारण को लेकर मनोमालिन्य हो सकता है। सन्तान पक्ष से भी कोई लाभ नहीं होने वाला है। दीपावली के पहले और बाद का समय आर्थिक सामाजिक, व्यापारिक कामों के लिये अच्छा जायेगा। स्थायी चल-अचल सम्पत्ति के खरीदने का योग इस वर्ष में है। परिवार में, प्रसन्नता रहेगी। सर्व मंगल के लिए प्रतिदिन श्रीगणेशजी को मोदक का भोग लगाकर बच्चों को बाँटें, गौ-माता को चारा डालें।

मकर—शनिदेव को साढ़े साती के अन्तिम अढ़ाई वर्ष का समय चल रहा है जो गत व्यतीत ५ वर्ष से अच्छा जायेगा। गत वर्षों में जो शारीरिक एवं आर्थिक क्षति हुई है उसकी इस वर्ष में पूर्ति हो जायेगी। आर्थिक आय के अवरुद्ध मार्ग खुल जायेंगे एवं नौकरी पेशावर्ग के लिये रुके हुए वेतन और पदवृद्धि के कामों में इस वर्ष सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। चिन्तायें दूर होंगी एवं पारिवारिक पुत्र सन्तानादि के सम्बन्ध के रुके हुए कार्य इस वर्ष में अवश्य पूर्ण होने से मानसिक कष्ट दूर होगे। मन व्याप्त निराशा दूर होकर जीवन में आशा की नवीन किरण का प्रादुर्भाव होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिये बहुत अच्छा जायेगा। इस समय में व्यापार से लाभ मिलेगा। नौकरी में उन्नति होकर वेतन बढ़ेगा। सन्तान पक्ष से लाभ का योग है। तीर्थयात्रा और धर्म कार्य में विशेष रुचि बढ़ेगी। शुभ कामों में धन खर्च होने का भी योग है। श्रीहनुमानजी का नियमित पूजन करें, शनिवार को भोग लगाकर बाँटें, सुदर्शन भगवान् की अर्चना करायें।

कुम्भ—स्वगृही शनिदेव विविध प्रकार से परेशानी पैदा करने वाला है। साढ़े साती भी प्रारम्भ है। लेकिन अपने घर में स्थित होने के कारण अधिक कष्ट कारक नहीं है। स्वास्थ्य और अर्थ सम्बन्ध कठिनाइयां समय-समय पर आयेंगी और निकल जायेंगी। राजकीय कार्यों में भी धन खर्च होगा, लेकिन कार्य सफल हो जायेंगे। सामाजिक कार्यों में अपयश मिलेगा। सम्बन्धियों के साथ पारस्परिक विवाद हो सकते हैं। आलस्य एवं प्रमादबश अच्छे कार्यों में रुकावट आयेगी। अधिक परिश्रम करने पर भी कई कार्य असफल हो सकते हैं। पराक्रम में वृद्धि, व्यक्तित्व में प्रभाव और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कृषि से लाभ मिलेगा। लौह, तिल तेल एवं श्याम रंग की वस्तुओं के व्यापार से लाभ का योग है। दक्षिण यात्रा होगी। परिवार से विवाद और भूमि संबंधी विवाद में विजय का योग है। राजनैतिक कार्यों में सफलता और प्राप्त होगी। श्रीहनुमत् पूजन करें।

मीन—नवमस्थान स्थित गुरु भाग्य के लिए अच्छा है। जिसके कारण से व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में वृद्धि होगी। उच्चपद मिलेगा एवं सामाजिक धार्मिक राजनैतिक कार्यों में सफलता का योग है। धर्म में अत्यधिक रुचि स्वयंके द्वारा धार्मिक आचरण अनुष्ठान सम्पन्न होंगे। तीर्थयात्रा, धार्मिक समारोहमें सम्मिलित होनेका बारम्बार सुअवसर आयेगा। आध्यात्मिक प्रवृत्ति धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, सात्विक विचार, सत्संग प्रवचन आदि में रुचि होगी। स्वयं एवं परिवार के लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आर्थिक प्राप्ति के लिए वर्ष अच्छा जायेगा। शुभकार्य सम्पन्न होंगे और शुभ कार्यों में धन का व्यय होगा। मनमें शान्ति और प्रसन्नता रहेगी, घर में सुखद वातावरण रहने का योग है।　　**यह भविष्य सामान्य गोचर ग्रह स्थिति के आधार पर है ! श्रीशुभं भवतु ॥**

मौलासर (राज०) में श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण का नवाह्न पारायण एवं श्रीसुदर्शन महायज्ञ का भव्य तथा

विराट् आयोजन सुसम्पन्न

★

मौलासर जि० नागौर (राज०) जयपुर (राजधानी राज०) से २५० कि०मी० पर स्थित है। जयपुर से मौलासर बसका किराया ४३)रु० देकर भगवान् श्रीसत्यनारायणके दिव्य दर्शन भव्य मन्दिर में किये जा सकते हैं।

यहाँ उक्त पारायण एवं महायज्ञ का विशाल आयोजन दि० १-४-६५ से ९-४-६५ तक श्री-सत्यनारायण भगवान् के मन्दिर के सामने भव्य मण्डप तथा सुन्दर मंच निर्माण कराकर सुसम्पन्न हुआ। श्रीसत्यनारायण भगवान् की प्रतिष्ठा सम्वत् १९६० वैशाख शुक्ल ७ को श्रीमद्वेदमार्ग प्रति-ष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य अनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु काञ्ची प्रतिवादि भयङ्कर मठ गादी स्वामी श्रीमदनन्ताचार्यजी महाराज के सान्निध्य एवं उनके मङ्गलाशासन के साथ सम्पन्न हुई थी। उस समय महात्मा, परम भागवत श्रीमान् सेठ लक्ष्मीनारायणजी, श्रीमान् भगवानबक्ष सोमानी जी अपने पुत्रों—श्रीहजारीमल सोमानी, श्रीहरनारायण सोमानी, श्रीओंकारमल सोमानी, श्रीराम-दयाल सोमानी के सहित उपस्थित थे।

मंचपीठ पर श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण आदिकाव्य का प्रवचन आदि सिद्ध नागौरिया मठाधीश श्रीमज्जगद्गुरु शमदमादि सदाचरण सम्पन्न विद्वान् **श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज**, डीडवाना विराज-कर प्रातः ९ से १२, सायं ३से६बजे तक उक्त आर्षकाव्य का सुमधुर प्रवचन करते थे। मर्यादा पुरुषो-त्तम भगवान् श्रीराम के उदात्त गुणों का प्रवचन सुनकर जन-जीवन में मर्यादा को समझने की शक्ति जागरूक हो, उनमें 'रामादिवत् वर्तितव्यम् न तु रावणादिवत्' श्रीराम के तरह आचरण करना चाहिए, रावण की तरह नहीं। पग-पग पर सोदाहरण समझाने की अनोखी सरल शैली आप में देखी गई। जो स्वयं मर्यादित होता है, उसके कथन का असर अचूक होता है।

प्रारम्भ में यज्ञकर्त्री **श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी** (धर्मपत्नी—डॉ० वै० वा० श्रीजुगलकिशोर जी सोमानी) स्वयं आदिकाव्य के प्रवचनकर्ता श्रीस्वामीजी महाराज का पूजन आरती, आरती प्रातः सायं प्रारम्भ और विराम के समय दैनिक किया करती थीं। पण्डाल खचाखच भर जाता था बाहर और सोमानी ट्रस्ट सोसायटी के आफिसके चबूतरे पर बैठकर लोग श्रीराम कथाका आनन्द लेते थे। इस ज्ञानगंगा में अवगाहन कर श्रोतागण आनन्द मग्न होते रहे। प्रतिदिन श्रोताओं को प्रसाद दिया जाता, धनुर्भंगकी कथाके समय श्रीमनोरमादेवी सोमानीने चाँदीका धनुष भेंट किया जो डीडवाना में भगवान् श्रीराम को धारण कराया गया।

श्रीसुदर्शन महायज्ञ—इसी अवसर पर श्रीसुदर्शन महायज्ञ का आयोजन भी श्रीमनोरमादेवी जी सोमानी द्वारा कराया गया। इस यज्ञ के सम्पादनकर्ता व्याकरण शिरोमणि **श्रीमान् एल० वेंकटाचार्य अयंगार**, एम० ए० बी-एड० थे। आप अपने साथ दस आचार्यों के सहित पधारे और प्रातः

सायं यज्ञ प्रबन्ध पाठ पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न करते थे। आप श्रीसुदर्शन दिव्य प्रबन्ध याग समिति और जीयर ऐज्यूकेशनल ट्रस्ट जो हिज हाईनेश श्री श्रीत्रिदण्डी श्रीमन्नारायण रामानुज चिन्न जीयर स्वामीजी की उपस्थिति में चलते हैं, उनके द्वारा समर्थित हैं।

आपका यह ६३ वां श्रीसुदर्शन याग मौलासर में हुआ। सुदर्शनजी भगवान् नारायण के दिव्य आयुध हैं। जो जीव को सदाचार्य द्वारा भगवत्-शरणागति के समय सप्तचक्राङ्कन प्राप्त होता है, जिससे अज्ञान से अन्धे जीव को भगवान् विष्णु के धाम का मार्ग दिखलाते हैं। जिनकी कृपा से ही वैकुण्ठधाम प्राप्त होता है। मानव जीवन निर्विघ्न व्यतीत होता है। वह प्रदेश भी सुख समृद्धि से सम्पन्न होता है। ईति भीति आदि के भय से मुक्त हो जाता है।

इसकी पूर्णाहुति दि० ९-४-९५ को मध्याह्न १ बजे हुई। श्री एस. वेंकटेशाचार्यजी ने श्री-मनोरमादेवी को यज्ञ भस्म धारण कराई और आशीर्वाद दिया। इस समय श्री श्रीस्वामी श्रीनिवासा-चार्यजी डीडवाना और स्वयं इस समाचार के लेखक भी उपस्थित थे। उनका सम्मान भी यज्ञाचार्य ने किया। आपकी समिति की बहुमुखी योजनाओं द्वारा सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार होता है।

मौलासर में सोमानी परिवार की दिव्य सेवायें—श्रीसत्यनारायण मन्दिर—सम्वत् १९८० में पूज्य गादी स्वामी श्रीमद् अनन्ताचार्यजी द्वारा इस मन्दिर में प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। वर्तमान में श्री-अनिलकुमार शास्त्री, श्रीप्रमोदकुमार शास्त्री अर्चक हैं। इस मन्दिर के साथ श्रीरामानुजकोट की स्थापना भी हुई।

श्रीसत्यनारायण आयुर्वेदिक औषधालय—यह विगत ६० वर्षों से निःशुल्क सेवारत है। सोमानी परिवार ने वर्तमानमें राज० सरकारको सुपुर्द कर दिया है। यह लाखों रुपयों की सम्पत्ति है।

श्रीसत्यनारायण बगीचा एवं गेस्ट हाउस—इस बगीचे को भगवान् सत्यनारायण के तुलसी, पुष्प उपलब्धि हेतु लगाया है। इसके द्वार के दोनों ओर ३-३ कमरे विश्राम गृह के रूप में बने हुए हैं। श्रीवाल्मीकीय रामायण के प्रवचन कर्ता श्रीस्वामी निवासाचार्यजी महाराज को उनके दल के साथ यहीं पर ठहराया गया था।

श्रीसोमानी हाईस्कूल छात्रावास - स्थानीय सीनियर हायर सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों के लिए आवास हेतु इसका निर्माण करवाया, जिसमें ६० कमरे हैं और लगभग १८० छात्र रहते हैं।

अध्यापकों हेतु आवासीय कालोनी—स्थानीय अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं हेतु २५ क्वाटरों का निर्माण कराया गया।

श्रीसत्यनारायण जल वितरण योजना—आज से ५० वर्ष पूर्व ग्रामवासियों की पेयजल सुविधा हेतु निजी व्यय पर कुए की टङ्की, पावर हाउस बनवाकर इस जल वितरण योजना से निःशुल्क जन-सेवा की गई। इसी क्रम में आवश्यकता को देखते हुए एक और बड़ी टङ्की का निर्माण इसी परिवार के श्री जे. के. सोमानी चेरिटेवल ट्रस्ट द्वारा एक लाख लीटर की क्षमता का निर्माण करवाया, जिससे गांव के ५०० परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। इस वर्ष श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी ने २५ लाख रुपये इसके विस्तार हेतु व्यय किये।

श्रीऊषाकुमारी सोमानी उच्च प्राथमिक विद्यालय—बालकों की शिक्षा हेतु इस विद्यालय का निर्माण श्रीओंकारमल सोमानी मेमोरियल पब्लिक ट्रस्ट द्वारा सन् १९६८ में एक लाख रुपये व्यय

किये गये। जिसमें ८ कमरे, बिजली पानी, फर्नीचर की सुविधा है। इसमें कक्षा १ से कक्षा ८ तक के ५५० छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा पांच लाख रुपये वार्षिक खर्च किया जाता है। सोमानी ट्रस्ट द्वारा पाँच लाख रुपयों से नये ब्लाक का निर्माण हुआ।

श्रीबसन्तकुमार सोमानी कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय—स्त्री शिक्षा को मद्देनजर रखते हुए श्रीजुगलकिशोर सोमानी द्वारा इस विद्यालय का निर्माण सन् १९६९ में किया गया। तीन लाख पैंतीस हजार रुपये की लागत से बना। इसमें ४०० बालिकायें प्रथम कक्षा से षष्ठ कक्षा तक अध्ययन कर रही हैं। दो वर्ष पूर्व यह माध्यमिक विद्यालय के रूप में उन्नति कर गया है। अब इसमें कक्षा १० तक बालिकायें अध्ययन कर सकेंगी।

श्री जे. के. सोमानी यात्री निवास—स्थानीय बस स्टेण्ड के निकट यात्रियों के विश्राम एवं आवास हेतु श्री जे० के० सोमानी चेरिटेबिल ट्रस्ट के अन्तर्गत श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी द्वारा दो लाख पचास हजार के व्यय से किया गया। इसके रख-रखाव को ट्रस्ट बहन करता है।

श्रीराजकीय मनोरमादेवी सोमानी उच्च प्राथमिक विद्यालय डाबड़ा—मौलासर, निकट डाबड़ा ग्राम में उक्त विद्यालय का निर्माण सन् १९७९-८० में श्रीजुगलकिशोर जी सोमानी ने दो लाख पांच हजार रुपयों में कराया। इसमें करीब ४०० छात्र कक्षा १ से कक्षा ८ तक अध्ययन करते हैं। श्रीमनोरमादेवी जी इसका ध्यान रखती हैं।

श्रीबसन्तकुमार सोमानी अतिथि गृह, लादड़िया—निकटवर्ती लादड़िया ग्राम में श्री मती मनोरमादेवी सोमानी द्वारा करीब १५ लाख रुपयों से सामुदायिक सामाजिक कार्यों हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्माण कराया।

श्रीलक्ष्मीनारायण भगवान् का मन्दिर लादड़िया—इसी ग्राम में भगवान् श्रीलक्ष्मी-नारायण का मन्दिर श्रीमनोरमादेवी सोमानी ने ढाई लाख रुपये लगाकर नव निर्माण कराया। यहाँ प्राण-प्रतिष्ठा श्री १००८ श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज पीठाधिपति नागोरिया मठ डीडवाना के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। लादड़िया के इन निर्माणों में श्रीमान् लादूरामजी सोमानी की प्रेरणा सराहनीय रही।

श्रीबसन्तकुमार सोमानी प्राथमिक विद्यालय, बेगसर—निकटवर्ती ग्राम बेगसर के पास बड़ी ढाणी में बच्चों के शिक्षण हेतु ढेढ़ लाख रुपये कीं लागत से प्राथमिक विद्यालय का निर्माण श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी ने करवाया।

श्रीबसन्तकुमार जुगलकिशोर सोमानी उ० प्रा० विद्यालय, मोरडूंगा (सीकर)—इस ग्राम में विद्यालय की आवश्यकता थी। ग्रामवासियों के अनुरोध पर श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी ने दस लाख रुपयों से यह भव्य भवन निर्माणाधीन है। इस प्रकार श्रीमती मनोरमादेवी सार्वजनिक सुख सुविधा शिक्षण कार्य में अपने द्रव्य का सदुपयोग करती रही हैं। दि० १०-४-९५ को आपने यज्ञान्त में बृहद्-भोज दिया। जिसमें मौलासर, कुचामन आदि के लोग सम्मिलित हुए।

धार्मिक समारोह में समागत महानुभाव—श्रीमहन्त स्वामी रामनारायणाचार्य जी रघुनाथजी का मन्दिर कुचामन, पं० गोकुलचन्द्रजी मिश्र लोसल, श्रीबाल-कृष्णजी सारड़ा सपरिवार

कुचामन सिटी, वैद्य शिवदत्त शर्मा मौलासर, श्रीकृष्णचन्द्रजी ब्रह्मानन्द आश्रम पुष्कर, बम्बई—श्री-लाडूरामजी सोमानी सपत्नीक सचिव—श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी, श्रीरामगोपाल पसारी सपत्नीक, श्रीरामप्रसाद सोमानी सपत्नीक; श्रीनन्दकुमार सोमानी सपत्नीक, श्रीमती लक्ष्मीदेवी सोमानी, श्रीमती सीताबाई तापड़िया, श्रीमती निर्मलादेवी भराणी, श्रीकृष्णदत्तजी वैद्य की पत्नी, श्रीमती श्री-चन्द्र मूंदड़ा, श्रीमती राधाकिशन सोमानी, श्रीनारायणलाल जी असावा, अजमेर—श्रीसम्पत्कुमार टवानी सपत्नीक, श्रीमती चन्द्रकलादेवी मालू, श्रीमती श्रीकान्ता जाखेटिया, टांडेलो—श्रीमती गङ्गा-देवी टवाणी, श्रीरामगोपाल टवानी, श्रीकृष्णकुमार टवानी सपत्नीक। इन्दौर—श्रीमती मदनी दादू साबू। सोलापुर—श्रीपुरुषोत्तमजी सिंगी सपत्नीक, श्रीमंजूदेवी तोषणीवाल, श्री पं० राधाकिशन गोघाट पुष्कर। धर्मपत्नी दीपासिंह की, वैद्य वासुदेवजी मिश्र सीकर, श्रीनन्दलाल शास्त्री विलेपार्ले बम्बई, श्रीसोहनलाल पुजारी, श्रीगोपालजी पुजारी, श्रीमनीरामजी पुजारी, भजन मण्डली स्वामीजी के साथ थे—श्रीबनवारीलाल श्रीअशोक शर्मा, श्रीराजू चौहान, श्रीमहेश बहड़, श्रीनिवासजी पंढरपुर, श्रीनन्दजी शिववाड़ी डीडवाना, मौलासर के वै० वा० पं० श्रीचिरंजीलालजी के सुपुत्र पं० राधेश्यामजी ने सपरिवार भाग लिया, इस प्रकार अनेक महानुभावों ने पधारकर आनन्द लिये।

श्रीसत्यनारायण मन्दिर में १६ पण्डितोंका वरण किया गया था जो विविध पुराणों विशेष रूप से श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण का पाठ कर रहे थे। वै० वा० बालकृष्णजी पुजारी के सुपुत्र प्रधानकलश का पूजन, दोनों समय पुष्पाञ्जली कराते थे।

स्थानीय—सोमानी ट्रस्ट सोसायटी आफिस के कार्यकारी सज्जन, श्रीअशोक अग्रवाल, श्री-सीताराम शर्मा, श्रीबालमुकुन्द शर्मा, श्रीरामकुमार सैनी, मौलासर के सरपंच, श्रीसन्तोषकुमार शर्मा, पोलीटेक्स आदि का सहयोग भी सराहनीय रहा।

अतिथियों का आवास—इस महायज्ञ में पधारे दाक्षिणात्य और उत्तरदेशीया पण्डितों, आगन्तुकों को वै० वा० श्रीओंकारमल सोमानी अतिथि गृह में आवास दिया गया। इस भवन का उद्घाटन दि० ७-११-६८ को ज० गु० श्रीस्वामी कृष्णमाचार्यजी महाराज, ज० गु० श्रीस्वामी श्री-निवासाचार्यजी महाराज कांचीं ज० गु० स्वामी श्रीरामनारायणाचार्यजी वेदान्ती अयोध्या, सेठ श्रीगोविन्दलाल बांगड़ के करकमलों से हुआ था। इसमें एक स्टैचू श्रीओंकारमलजी का लगा है।

सोमानी परिवार के अन्य भवन एवं कृतियाँ—श्रीबिरदीदेवी सोमानी स्मृति भवन में वाचनालय चलता है। पुरानी कोठी—यह श्रीसत्यनारायण मन्दिर के सामने बन्द रहती है। श्री-सत्यनारायण गोशाला। श्रीमनोरमादेवी सोमानी जिसमें ठहरीं थीं यह बहुत विशाल कोठी है। सामने—श्रीरामदयाल सोमानीजीकी कोठी। पाश्वमें श्रीवासुदेव सोमानीजीकी विशाल कोठी है। श्री-हजारीमल सोमानी मार्केट श्रीराजकीय सोमानी उच्चीकृत स्वास्थ्य केन्द्र। सोमानी इण्डस्ट्रीयल स्टेट मौलासर। सड़कों पर वृक्षारोपण। हरिजन कालोनी, कुएं निर्माण, श्रीराजकीय मांगीदेवी सोमानी माध्यमिक विद्यालय, दौलतपुरा। श्रीराजकीय केसरदेवी सोमानी उच्च प्राथमिक विद्या-लय, चावड़िया। श्रीसोनीदेवी सोमानी धर्मशाला, लाडड़िया। टेलीफोन एक्सचेंज भवन। ब्राह्मण कालोनी निर्माण श्रीसत्यनारायण आवासीय कालोनी। राजकीय सोमानी सीनियर हायर सेकेण्डरी विद्यालय। जी. डी. सोमानी पोलिटेक्निक मौलासर, श्रीमती सोनीदेवी सोमानी मा० बालिका

लासर में आयोजित श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण महा महोत्सव के छाया-चित्र

व्यास पीठ पर विराजमान श्रीसम्प्रदाय के विशिष्ट विद्वान् वक्ता स्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज, डीडवाना
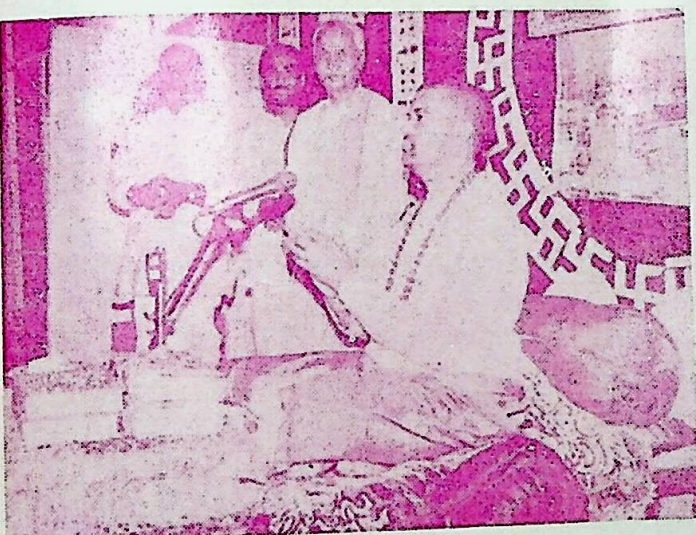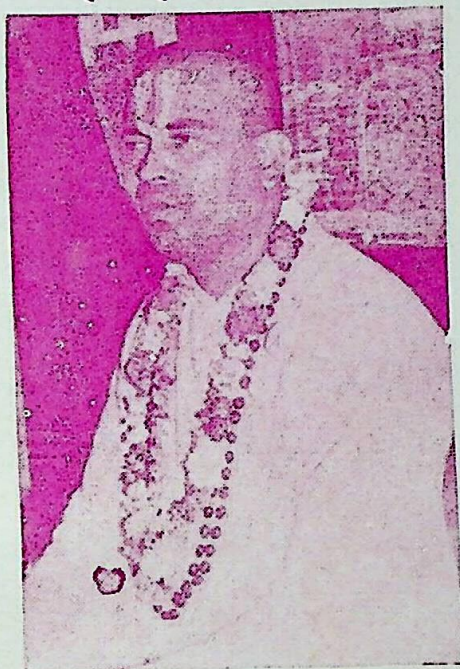
भाव मुद्रा में करतल ध्वनि के साथ भगवान् श्रीराम का गुणगान करते श्रीस्वामीजी महाराज, निकट खड़े पं० केशवदेव शास्त्री सम्पादक–अ. स. वृन्दावन तथा अन्य ।

श्रीराम-कथा की पूर्णता पर महोत्सव की आयोजिका–श्रीमनोरमादेवी सोमानी आरती करती हुईं भक्त परिकर के साथ
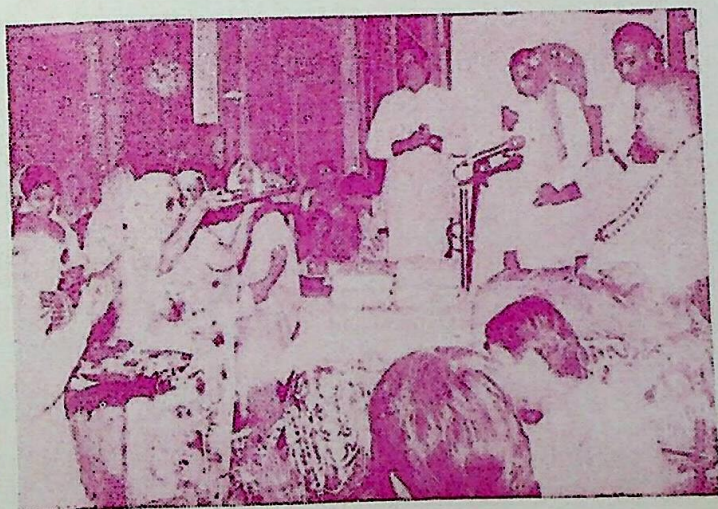
श्रीसुदर्शन महायज्ञ मण्डप में विराजमान
श्रीसुदर्शन भगवान् और स्थापित
महाकलश सन्निधि

श्रीसुदर्शन महायज्ञ के आचार्य श्रीमान्
एस. वेंकटाचार्य अयंगार स्वामीजी
महाराज, दक्षिण
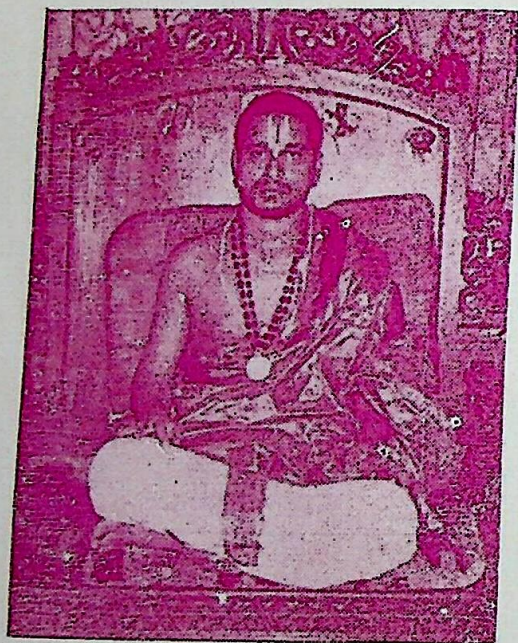
वै- वा० श्रीमान् जुगलकिशोरजी
सोमानी, जिनकी पावन-स्मृति
में उक्त दिव्य भव्य आयोजन
उनकी धर्मपत्नी श्रीमती
मनोरमादेवी सोमानी ने
सम्पन्न कराया।
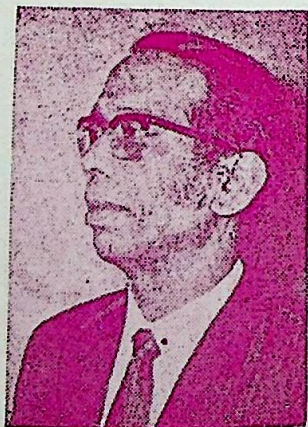
विद्यालय कुचामन, श्रीमती चन्द्रकलादेवी सोमानी सभाकक्ष एवं पुस्तकालय, कुचामन सिटी आदि संस्थायें उल्लेखनीय हैं।

श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी द्वारा १०८ श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण—प्रवचन—शुकताल वह तीर्थ है जहाँ श्रीशुकदेवजी ने गङ्गातट पर राजा परिक्षित को श्रीमद्भागवत जी की कथा सुनाकर मुक्ति प्रदान की थी। उसी परमपवित्र स्थल शुकताल में श्री श्री १०८ श्रीजी बाबा महाराज मथुरा द्वारा व्यास पीठ पर विराजमान होकर श्रीकृष्ण की सुमधुर लीलाओं का श्रवण तथा १०८ पण्डितों द्वारा पारायण आश्विन शुक्ल प्रतिपदा सं० २०५२ सोमवार दि० २५ सितम्बर १९९५ से सप्ती रविवार दि० १ अक्टूबर '९५ तक सम्पन्न होगा।

इस ज्ञानयज्ञ की सम्पादिका श्रीमती मनोरमादेवी सोमानी, बम्बई हैं।

सप्त सरोवर हरिद्वार में विशाल ज्ञानयज्ञ विचाराधीन है। सम्भवतः उसकी तिथियाँ निश्चित होना शेष है।

सर्वोपरि प्रेरक प्रसङ्ग यह है कि देश में श्रीमान् महानुभाव तो बहुत से हैं। धन में प्राणों के समान आसक्ति होती है। उस आसक्ति को भगवान् की ओर उन्मुख करने वाले सन्त विरले ही होते हैं। सोमानी परिवार के मूल पुरुष श्रीलक्ष्मीनारायणजी. श्रीभगवान् वक्षजी पर श्रीमज्जगद्गुरु प्र० भ० मठकांची पीठाधीश श्री १००८ श्रीगादी स्वामी श्रीमद् अनन्ताचार्यजी महाराज की पूर्णकृपा मंगलाशासन था जिससे यह परिवार 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' अपने द्रव्य को लोकार्पण करने में तत्पर रहा और आज भी है। यह सब भगवत्कृपा ही है।

—पं० केशवदेव शास्त्री
(सम्पादक)

आवश्यक सूचना

जिन महानुभावों ने अनन्त-सन्देश की भेंट न भेजी हो, वे कृपया भेज दें। 'अनन्त-सन्देश' पेपर, छपाई आदि की मँहगाई के कारण इसकी आजीवन भेंट ३००) रु० और वार्षिक भेंट २५)रु० कर दी गई है।

अतः इनको ध्यान में रखकर भेंट प्रेषित करें। हमारी प्रार्थना है कि पत्र का आजीवन सदस्य बनकर हमारा मनोबल बढ़ायें। जिनको कोई भी शिकायत हो वे एक पोस्टकार्ड का उपयोग कर अपनी शिकायत लिखित भेजें। पता साफ-साफ लिखने पर ही सही कार्यवाही हो सकेगी, कृपया अपने डाकघर का पिनकोड नम्बर अवश्य लिखें। —सम्पादक

समाचार स्तम्भ—

भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण का शताब्दी महोत्सव, सोलापुर

सोलापुर. श्रीवैष्णवों का गढ़ है। यहाँ श्रीलक्ष्मीनारायण भगवान् का प्राचीन मन्दिर है। जिसे १०० वर्ष हो गये हैं। इसी मन्दिर का शताब्दी महोत्सव स्थानीय भागवतों के द्वारा मिती चैत्र शुक्ल शुक्रवार सं० २०५२ दि० १४-४-९५ से वैशाख कृष्ण ९ रविवार श्रवण नक्षत्र सं० २०५२ दि० २३-४-९५ तक कांची प्रतिवादि भयंकर मठाधीश श्रीमज्जगद्गुरु गादी स्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज के तत्वावधान एवं सान्निध्य में सुसम्पन्न होगा।

इस शताब्दी महोत्सव में चार हजार दिव्यप्रबन्ध पाठ, वेदपाठ, स्तोत्र पाठ, श्रीविष्णुसहस्रनाम पाठ, श्रीगीताजी, श्रीमद्भागवत, श्रीविष्णु पुराण, श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण, श्रीसुदर्शनशतक एवं हवन श्री भगवान् का तिरुमञ्जन, शृंगार तुलसी अर्चना तीर्थगोष्ठी प्रसाद आदि कार्यक्रम होंगे। श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी वासुदेवाचार्यजी महाराज 'विद्या भास्कर' के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। यदि सुयोग हुआ तो श्रीवैष्णव सम्मेलन भी होगा। यथासम्भव उत्तर भारत के महन्त, सन्तों, विद्वानों को आमन्त्रण भेज रहे हैं। यदि डाक की अव्यवस्था से व्यवधान हो तो भी श्री महानुभावों को अपना अभीष्ट स्थल मान अवश्य पधारने की कृपा करेंगे।

विनीत—

राजगोपाल सोमानी एवं समस्त

भागवत गोष्ठी, सोलापुर

खोरासा में श्रीब्रह्मोत्सव एवं गद्दी महोत्सव

खोरासा, जिला-जूनागढ़ (गुजरात) श्रीवेङ्कटेश देवस्थान में श्रीवेंकटेश महाप्रभु का श्रीब्रह्मोत्सव वैशाख कृष्ण ७ शुक्रवार सं० २०५२ तदनुसार दि० २१-४-९५ से वैशाख कृष्ण ११ मंगलवार दि० २५-४-९५ तक सुनियोजित ढंग से मनाया जायगा।

इस महोत्सव के प्रथम दिन दि० २१-४-९५ शुक्रवार को खोरासा देवस्थान के वै० वा० अनन्तश्री विभूषित ज० गु० श्रीस्वामी देवकृष्णाचार्यजी महाराज रिक्तस्थान पर वैकुण्ठवासी अनन्तश्री श्रीजगदाचार्य स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज डीडवाना के कृपापात्र अनन्तश्री विभूषित श्रीस्वामी श्रीनिवासाचार्यजी महाराज वर्तमान पीठाधीश्वर नागोरिया मठ डीडवाना (राज०) के गुरुभ्राता श्रीस्वामी श्यामनारायणाचार्यजी महाराज का पट्टाभिषेक एवं गद्दी महोत्सव को आयोजित किया गया है।

अतः इस शुभ अवसर पर आप श्रीवैष्णव महानुभावों को पधार कर अपने सुमंगलाशासन प्रदानकर उत्सव की शोभा सम्वर्धन करने की बिनती है। पधार कर हमें अनुगृहीत करें।

निवेदक—

समस्त ट्रस्टीगण एवं भक्त मण्डली

श्रीवेंकटेश देवस्थान, खोरासा

नागपुर में श्रीद्वारकाधीश देवस्थान प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

नागपुर, में श्रीद्वारकाधीशजी, श्रीरुक्मिणी, सत्यभामा समेत श्रीवेणुगोपाल भगवान् तथा श्री-अनन्त रामानुजकोट सत्संग भवन मन्दिर धारस्कर रोड इतवारी की प्राण-प्रतिष्ठा का विराट् आयोजन श्रीकाञ्ची प्रतिवादि भयंकर जगद्‌गुरु गादी श्रीमच्छ्री निवासाचार्यजी महाराज के तत्वावधान में सं० २०५२ चैत्र सुदी १ शनिवार दि० १ अप्रैल ९५ से सं० २०५२ चैत्र सुदी ६ गुरुवार दि० ६ अप्रैल १९९५ तक मुख्य यजमान श्रीभँवरलालजी मालू के द्वारा सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा होने पर भगवान् का अग्रतीर्थ सविधि सम्मान जगद्‌गुरु गादी स्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज को दिया गया। आपके नेतृत्व में पधारे दाक्षिणात्य आचार्य श्रीवैष्णवों द्वारा पाञ्चरात्रागम, वेद, दिव्यप्रबन्ध, हवन सम्प्रदाय के ग्रन्थों का पारायण उत्तरदेशीय विद्वानों द्वारा इतिहास पुराणादि का पारायण प्रवचनादि धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए। अनेक गद्यस्थ सन्त, महन्त, विद्वानों ने निर्हेतुक कृपा से पधार कर आयोजन की शोभा सम्वर्धित की।

दि० १ अप्रेल ९५ को श्रीस्वामी श्रीनिवासाचार्यजी महाराज का माहेश्वरी भवन में पधारते ही भव्य स्वागत किया गया। मध्याह्नोत्तर कलश स्थापना, मण्डल रचना, अग्निमन्थन, महाकुम्भ-स्थापन कार्य हुआ।

दि० २ अप्रेल ९५ को प्रातः अर्चन, हवन, धान्याधिवास, शयनाधिवास हुए।

दि० ३ अप्रेल ९५ को हवन नेत्रोन्मीलन, चतुस्थानार्चन. हवन सप्तदश कलश स्थापन।

दि० ४ अप्रेल ९५ को हवन, तत्वसंहारन्यास, चतुस्थानार्चन,हवन तत्व सृष्टिन्यास, प्राणादिश वायुन्यास, प्राण-प्रतिष्ठा कार्य हुए।

दि० ५ अप्रेल ९५ को हवन, मूर्तिहोम, शान्तिहोम, प्रायश्चित्तहोम, पूर्णाहुति एवं महामंगल आरती, ब्राह्मण भोजन हुए।

दि० ६ अप्रेल ९५ को महामङ्गल दर्शन, भव्य शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से महाशयन दर्शन (रात्रि १० बजे)।

दि० ७ अप्रेल ९५ को महाप्रसाद (माहेश्वरी भवन में) प्रातः ११ बजे से रात्रि १० बजे तक। समागत समस्त आचार्यगणों की तथा महन्त सन्त विद्वानों की मुक्तहस्त से सम्भावना समर्पित की गई।

ट्रस्टी मण्डल–सर्वश्री भँवरलाल मालू, भागीरथ रांदड़, शोभागमल मालू, धनराज बजाज, चांदमल काबरा, पुखराज बंग, पूनमचन्द मालू गोरीशंकर मानधणा शिवरतन काबरा।

स्वागतोत्सुक–बनवारीलाल पुरोहित आदि से सोहनलाल जाजू तक बड़ी नामावली है।

उक्त प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव सकुशल, निर्विघ्न, वैभव के साथ सम्पन्न हुआ।

—पं० केशवदेव शास्त्री

श्रीआदिसिद्ध-स्थान नागोरिया मठ में श्रीब्रह्मोत्सव सम्पन्न

डीडवाना, जि०—नागोर (राज०) में आदिसिद्ध-स्थान नागोरिया मठ में श्रीजानकीवल्लभ भगवान् का श्रीब्रह्मोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अनन्तश्री विभूषित श्रीमज्जगद्गुरु श्रीस्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज के सान्निध्य में चैत्र शु० ६ रविवार दि० ६-४-६५ से चैत्र शु० १५ शनिवार सं० २०५२ दि० १५-४-६५ तक सानन्द समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन गरुड प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण हुआ।

वृन्दावन से श्रीस्वामी जगन्नाथाचार्यजी (श्रीरङ्गमन्दिर) से पधारे थे। आप भगवान् का अभिषेक, वाहनों पर पधराना, नित्य नवीन शृंगार हवन मण्डप में हवन, प्रबन्ध-पाठ करते थे। चन्द्र, सूर्य, गरुड़, हनुमान, मण्डप आदि सवारी मन्दिर में ही चार परिक्रमा करती है। अन्तिम दिन नगर भ्रमण को गट्टानी बगीचा पधारती है। पूर्णिमा को वृहत् तदीयाराधन के साथ श्रीब्रह्मोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव में श्रीसीताबाई तापड़िया, श्रीगंगाबाई श्रीमती रुक्माबाई दांडेली, श्रीहजारीमल लादड़िया, श्रीदेवकीनन्दन जी, श्रीनिवासाचार्यजी पण्ढरपुर, पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा, मूलचन्द्रजी काबरा, श्रीरामचन्द्रजी सोनी सपत्नीक, श्रीकैलाशजी की सर्वविध सेवायें प्रशंसनीय थीं। प्रधान अर्चक श्रीरामचन्द्र शास्त्री अपनी सेवामें सन्नद्ध देखे गये।

—सम्पादक

श्रीबदरीनारायण-धाम में १०८ श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ

श्रीबदरीनारायण-धाम हिमालय में अष्टोत्तरशत (१०८) श्रीमद्भागवत पारायण ज्ञानयज्ञ दि० १५ जौलाई ६५ शनिवार से २२ जौलाई ६५ शनिवार तक सम्पन्न होगा। व्यासासन पर श्री-महन्त स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी शास्त्री (बालक स्वामीजी) काशी विराजकर सुमधुर प्रवचन के माध्यम से श्रीकृष्ण-कथा श्रीबदरीश को श्रवण करायेंगे। यह विराट् आयोजन खिचड़ी आश्रम के सामने मैदान में होगा। समस्त भागवतों के महाप्रसाद और आवास की व्यवस्था सम्यक् रूप से की जायेगी।

निवेदक – **नरेशचन्द्र शर्मा (नारायण)**

श्रीअमृत महोत्सव पुरी में सम्पन्न

अशरण शरण, पतितपावन भगवान् श्रीजगन्नाथजी परमपवित्र पुरुषोत्तम धाम पुरी क्षेत्र में स्थित श्री श्री १००८ श्रीगरुडध्वजाचार्य जीयर स्वामी मठ की परम कृपामयी प्रेरणा से दि० २-३-६५ से दि० १२-३-६५ तक सहस्र वर्ष समाप्ति में आयोजित "अमृत महोत्सव" बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें भगवत् स्तोत्रों का पाठ, वेदपाठ, श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ, श्रीवेंकटेश तथा श्रीगोदाम्बाजी की प्रतिष्ठा आदि कार्य हुए। बम्बई निवासी – परम वैष्णव चौकसी परिवार प्रमुख श्रीराजीवलोचन, खाण्ड परिवार के श्रीकुलभूषण तथा विष्णु डोरीवाला एवं अन्यान्य वैष्णवजनों ने तन, मन, धन से सभी कार्यों में पूर्ण सहयोग किया। प्रतिष्ठा आदि कार्य के यजमान मठ के उत्तराधिकारी महन्त श्रीइन्दिरारमण स्वामी को बनाया गया। यज्ञादि सभी कार्यों को विधि पूर्वक गया के मठाधीश श्रीराघवाचार्यजी महाराज ने सम्पन्न कराया।

पुष्करणी की प्रतिष्ठा, श्रीवेंकटेशजी एवं गोदम्बाजी की प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई। श्रीत्रिविक्रम शास्त्रीजी ने श्रीमद्भागवत सप्ताह का श्रवण कराकर सभी लोगों को अमृत पान कराया, मठ में निवास करने वाले सभी वैष्णव, महात्माओं, कर्मचारियों छात्रों ने अहर्निश आगन्तुकों की सेवा, शुश्रुषा में भाग लिया।

प्रेषक—माधवाचार्य शास्त्री, जीयर स्वामी मठ, पुरी

शुभ सूचना — सहस्रगीति का प्रकाशन पूर्ण

समस्त श्रीवैष्णव महानुभावों को सूचित किया जा रहा है कि श्रीशठकोप सूरि की अमरकृति 'सहस्रगीति' का तृतीय भाग भी प्रकाशित हो गया है। यह ग्रन्थ तीन भागों में प्रकाशित हुआ है। यह मूल गाथाओं के साथ 'भगवद्विषय' नामक ३६ हजार व्याख्यान संस्कृत भाषामय सुन्दर नागरी लिपि में निबद्ध है। नीचे मूल गाथा और अवतारिका का हिन्दी भावार्थ, दशक का सार भी दिया गया है। तीनों भागों का मूल्य क्रमशः ८०), ८०), ९०)रुपये=२५०)रुपये मात्र है।

ग्रन्थ का साइज २०×३०=८ आकर्षक छपाई, सुन्दर पेपर, पृष्ठ सख्या दो हजार से अधिक, डाक व्यय ३०)रु० पृथक् है।

पुस्तक प्राप्ति स्थान –

श्रीरंगनाथ प्रेस
रंगजी का पश्चिम कटरा, वृन्दावन–२८११२१ (उ प्र)
फोन—४४२१३१ (०५६५)

मधुसूदनाचार्य वेदान्ती
श्रीरंगमन्दिर त्रिमाली
वृन्दावन (मथुरा) उ० प्र०

भगवान् श्रीभोगिशयन काशी की प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न

वाराणसी, अस्सी नगवा के मध्य भगवान् भोगिशयन का दिव्यदेश अनन्तश्री विभूषित काशी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामीजी महाराज के सत्प्रयास से लगभग दो दशकों में पूर्ण हुआ। इस दिव्यदेश में शेषशायी भगवान् श्रीरंगनाथजी, श्रीगोदाम्बाजी,पद्मावतीजी समस्त आल्वार, श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज की सन्निधियां हैं। विशाल घण्टा टंगा है।

इस दिव्यदेश की प्रतिष्ठा कराने आचार्यगण हैदराबाद से पधारे थे—श्री श्रीनिवासाचार्य (श्रीधराचार्य) यज्ञाचार्य थे। जोकि सीतारामबाग मन्दिर हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) ५०००१ से पधारे थे। आपके साथ श्री अनन्ताचार्य, श्रीरामचन्द्राचार्य, श्रीवेंकटाचार्य, श्रीपार्थसारथि, श्रीहरिकृष्णमाचार्यजी पधारे। इन्होंने प्रतिष्ठा कार्य यथालब्धोपचारैः सम्पादित किया।

इस प्रतिष्ठा कार्य में तिरुपति हिल्स से श्रीस्वामी चतुर्भुजाचार्यजी मूलमठ तिरुपति, श्रीगोपालाचार्यजी (सहगामी) तिरुपति, श्रीचन्द्रशेखराचार्यजी, श्रींपण्डितप्रवर नवरङ्ग चतुर्वेदीजी भी पधारे थे। श्रीमान् दामोदरदास सपत्नीक बेगमबाजार हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) ने अपनी आर्थिक सेवा से इस प्रतिष्ठा महोत्सव को सम्पन्न कराया। वे वास्तव में धन्यवादार्ह हैं।

अनन्तश्री काशी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्यजी महाराज तो शरीर से अशक्त दर्शनीय मात्र हैं, उन्हें पक्षाघात ने सता रखा है। उनके शिष्य ज० गु० रा० स्वामी यतिराजाचार्य ने यावद्बुद्धि बलोदय कार्य की देखभाल की। उनके साथ निर्देशक रूपलेरखा था पं० भोलानाथ पाण्डेयजी जो उनके संस्कृत विद्यालय के प्राचार्य हैं। अब इन पीठ के महानुभावों को सोचना और अथक् प्रयत्न करके प्रतिष्ठित विग्रहों को भोगराग की यथोचित व्यवस्था करनी चाहिए जिससे भगवदापचार न हो सके। इतिशम्।

—सम्पादक

अहोविल पीठाधीश्वर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८ श्रीवण् शठकोप श्रीनारायण यतीन्द्र महादेशिक महाराज अहोविल दक्षिण भारत का श्रीधाम-वृन्दावन आगमन

वृन्दावन–दि० १७–४–६५ को सायं ७ बजे अहोबिल पीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी श्रीवण् शठकोप श्रीनारायण यतीन्द्र महादेशिक महाराज अपने दल-बल के साथ श्रीवृन्दावन पधारे। श्रीरंग-मन्दिर की ओर से चुंगी चौराहे पर उनका स्वागत पूर्ण कुम्भ माल्यार्पण तथा वेदध्वनि से किया गया, वहाँसे उनकी शोभामय यात्रा बैण्डबाजा स्तोत्रपाठके सहित श्रीतोताद्रि मठ पधारी। मध्य में भागवत आश्रम के युवराज ने माला पहनाकर साष्टांग की। श्रीहरिदेव मन्दिर पर कपूर आरती माल्या-र्पण किया, तोताद्रि मठ पर कलश माल्यार्पण, फल भेंट के साथ कपूर आरती करने के बाद एक कुर्सी पर विराजकर श्रीस्वामीजी ने भक्तों को अपना आशीर्वाद रूप पीताक्षत प्रदान किये। स्वामीजी के ठहरने आदि का समस्त प्रबन्ध यहीं पर था। दि० १८ अप्रेल को प्रातः १० ३५ पर श्री जीयर स्वामीजी महाराज श्रीरंगमन्दिर पधारे। पूर्वद्वार पर ही भगवान् का श्रीशठकोप, उत्तरीय, माला, चन्दन, तुलसी पालकी में ही आया और स्वामीजी को प्रदान किये गये, पश्चात् मन्दिर में दर्शन आदि कार्य सम्पन्न हुए, सायंकाल स्वामीजी अपने परिकरों के साथ श्रीवृन्दावन देवालयों के दर्शनार्थ गये।

दि० १९ अप्रेल को श्रीस्वामीजी ने अपने दल के साथ गोकुल, गोवर्धन, मथुरा आदि के दर्शन करके अपने को धन्य किया। सायंकाल श्रीरंगमन्दिर सत्संग भवन में आप अपने भगवान् के साथ पधारे, यहाँ चाँदी के मण्डप में भगवान् को झूले पर विराजमान किया गया, बताये गये समय के अनुसार सायं ७ बजे समस्त श्रीवैष्णव भागवत उपस्थित थे, किन्तु श्रीअहोबिल पीठाधीश २ घण्टे विलम्ब से रात्रि ९ बजे पधारे, लम्बे इन्तजार ने नीरसता प्रदान की, उपस्थित जन-समुदाय को उस समय और अधिक कष्ट हुआ जब स्वामीजी ने अपना प्रवचन हिन्दी में बोलने से असमर्थता प्रकट की, किन्तु इस प्रवचन को बड़े ही सरस रूप में श्रीरंगमन्दिराध्यक्ष श्रीस्वामी गोवर्धन रंगाचार्यजी महाराज ने हिन्दी रूपान्तर कर प्रस्तुत किया–श्रीअहोबिल पीठाधीश स्वामीजी के २२ मिनिट के प्रवचन में भगवान् श्रीकृष्ण का यशोगान करते हुए कहा कि ब्रज की इस दिव्य रज में जो श्रीकृष्ण पादारविन्द संस्पर्श से मोक्ष प्रदा-यनी है में लोट लगायें सारे शरीर में ब्रजरज लिपटायें ऐसी मेरी भावना है, ब्रज के लोग बड़े सरल और निष्कपट सेवाभावी हैं। इसलिए भगवान् यहाँ जन्म लेते हैं और क्रीडा करते हैं, धन्य हैं ये ब्रजधाम।

इस कार्य की समाप्ति के बाद आप केशीघाट स्थित श्री जानकीवल्लभ मन्दिर पधारे जहाँ ज० गु० रा० श्रीस्वामी भगवानदासाचार्यजी महाराज ने आपका दिव्य स्वागत किया।

दि० २० अप्रेल को अपने नित्य कैंकर्य को पूर्णकर आप श्रीतोताद्रि मठ मन्दिर में पधारे जहाँ महन्त श्रीस्वामी रामप्रपन्नाचार्यजी महाराज ने आपका भव्य स्वागत किया मठ की ओर से आपका बहुमान हुआ। इसी मध्य अनन्त-सन्देश पत्रिका की ओर से इस विवरण के लेखक आचार्य नरेशचन्द्र शर्मा ने श्रीस्वामीजीको अनन्त-सन्देशकी प्रतियाँ भेंट कीं और आशीर्वाद प्राप्त किया, पत्रिका का अवलोकन कर बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि प्रकाशन कार्य बड़ा कठिन होते हुए सम्प्रदाय उत्थान का ससक्त माध्यम है इसे और सुन्दर बनायें, मध्याह्न १ बजे स्वामीजी दिल्ली को प्रस्थान कर गये।

इन तीन दिनों में स्वामीजो के साथ पधारे १५० से अधिक भक्तों के प्रसाद आदि की व्यवस्था २ दिन श्रीरंगमन्दिर की ओर से और २ दिन श्रीतोताद्रि मठ में हुई। मठ के समस्त सेवकों ने अथक् परिश्रम किया, महन्त श्रीस्वामी रामप्रपन्नाचार्यजी की सेवा और उत्साह सराहनीय रहा। चलते समय श्रीरंगमन्दिर की ओर से श्रीस्वामीजी की सम्भावना एवं साथ में पधारे समस्त आचार्यों की सम्भावना, श्रीस्वामी गोवर्धन रंगाचार्यजी महाराज ने स्वयं उपस्थित होकर की, आपने श्री अहोविल पीठाधीश से फिर वृन्दावन आने का आग्रह किया। प्रस्तुति—आचार्य नरेशचन्द्र शर्मा

श्रीसदाचार पाटोत्सव सम्पन्न

श्रीहरिदेव मन्दिर वृन्दावन का श्रीसदाचार पाटोत्सव प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक १७-३-९५ से १९-३-९५ तक त्रिदिवसीय रूप में सम्पन्न हुआ। अनन्तश्री विभूषित पूज्यपाद वेदान्त-शिरोमणि श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का चित्रा नक्षत्र में द्वितीय पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय श्रीस्वामी कमलनयनाचार्यजी महाराज का उत्तरा फाल्गुनी में तिरुमञ्जन हुआ। तीर्थ गोष्ठी आदि हुए। श्रीगीताजी, श्रीविष्णु सहस्रनाम पाठ, अन्य स्तोत्र पाठ विद्वानों के प्रवचन आदि कार्य हुए। अन्तिम दिन पूज्य स्वामाजी श्रीरामानुजाचार्य जी महाराज वृहद् शोभायात्रा नगर भ्रमण को पधारी, बैण्डबाजा, श्रीहरिनाम संकीर्तन से यात्रा की शोभा विशेष थी, विशेष तदियाराधन हुआ। उक्त सम्पूर्ण कार्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी देवनारायणाचार्य के तत्वावधान में हुआ।

गयाधाम में विराट् श्रीवैकुण्ठोत्सव महायज्ञ

समस्त धर्मानुरागी प्रिय श्रीसम्प्रदायावलम्बी सज्जनों को विदित हो कि श्रीरामानुजाचार्य मठ देवघाट, गया में—स्वनामधन्य श्रीचतुर्भुज ब्रह्मचारी का वैकुण्ठोत्सव महायज्ञ एवं तदीयाराधन उनके ही आचार्य श्री १००८ श्रीमद्वेदमार्ग प्रतिष्ठापनाचार्योभय वेदान्त प्रवर्तकाचार्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य सत्सम्प्रदायाचार्य जगद्गुरु भगवदनन्तपादीय जगद्वन्द्य जगदाचार्य श्रीमद्विष्वक्सेना-चार्य श्रीत्रिदण्डि स्वामीजी महाराज की अध्यक्षता में विक्रमीय सम्वत् २०५२ वैशाख कृष्ण ११ एकादशी दिन भौमवार तदनुसार दि० २५-४-९५ ई० से प्रारम्भ होकर अमावस्या के दिन शनिवार तदनुसार दि० २९-४-९५ तक बड़ी धूम-धाम के साथ होने रहा है।

अतः आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से सानुरोध प्रार्थना है कि इस अवसर पर इष्ट मित्रों के साथ सम्मिलित होकर तदीयाराधन महायज्ञ को सफल बनाकर पुण्य के भागी बनें।

विनीत—
स्वामी राघवाचार्य
श्रीरामानुजाचार्यमठ देवघाट, गया

स्वागताध्यक्ष—
जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य 'विद्या भास्कर'
कोसलेश सदन, अयोध्या

श्रीहरिदेव वाटिका में श्रीमद्भागवत सप्ताह सम्पन्न

श्रीहरिदेव वाटिका, वृन्दावन में श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ का आयोजन दि० ८-३-९५ से १७-३-९५ तक सानन्द सम्पन्न हुआ। व्यासपीठ पर श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी देवनारायणाचार्यजी महाराज जीयर ने विराजकर सुमधुर कथामृत पान कराया। यजमान थे श्रीनन्दलालजी मोर बम्बई, आप श्रीराधाकृष्णजी मोर के छोटे भाई हैं। अन्तिम दिन वृहद् भण्डारा हुआ।

—नरेशचन्द्र शर्मा

तपोमूर्ति विद्वन्मूर्धन्य वीतराग सन्त श्रीस्वामी रंगाचार्यजी महाराज का स्मृति महोत्सव सम्पन्न

वृन्दावन, श्रीरंगनाथ प्रेस प्रांगण में श्रीस्वामी रंगाचार्यजी महाराज (काशी) का प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रीवैष्णव संगोष्ठी स्मृति महोत्सव दि० २८-३-९५ को श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी देवनारायणाचार्य त्रिदण्डी महाराज श्रीहरिदेव पीठ की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वप्रथम मंच पर स्थापित भाष्यकार श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज श्रीस्वामी वेदान्तदेशिकाचार्यजी महाराज एवं श्रीस्वामी रंगाचार्यजी महाराज (काशी) के चित्रों को माल्यार्पण किया गया, तत्पश्चात् मंगलाचरण हुआ।

परम्परानुसार दो श्रीवैष्णवों का विशेष सम्मान किया गया। इस वर्ष श्रीमज्जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीस्वामी भगवानदासाचार्यजी महाराज वृन्दावन का तथा योगिराज श्रीस्वामी मधुसूदनाचार्यजी महाराज (काशी) का चद्दर उढ़ाकर माल्य और संभावना के साथ महोत्सव संयोजक—पं० श्रीकेशवदेवजी शास्त्री ने सम्मान किया।

महोत्सव में उपस्थित श्रीरामानुज सम्प्रदाय के अनेक प्रान्तों से पधारे विशिष्ट विद्वान् धर्माचार्यों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये जिनमें सर्वश्री रामानुजसम्प्रदायाचार्य बयोवृद्ध सन्त श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी महाराज, अहमदाबाद ने अपने अस्वस्थ होने पर भी उपस्थित होकर मंगलाशासन प्रदान किया, जयपुर से लक्ष्मीनारायण मन्दिर के अधिकारी स्वामी श्रीत्रिविक्रमाचार्यजी महाराज, डा० श्रीगिरिराज जी शास्त्री, श्रीअयोध्याप्रसादजी शास्त्री, वैद्य श्रीप्रयागनारायणजी पाठक प्रयाग, डा० श्रीरामप्रकाश शास्त्री सम्पादक 'वरवरमुनि सन्देश' बदायूँ, बड़ा खटला के श्रीयुवराज स्वामी, श्रीभागवत आश्रम के युवराज स्वामी, श्रीस्वामी दामोदराचार्यजी महाराज सवामन शालग्राम, श्रीस्वामी भरतदासाचार्यजी, श्रीउद्धव रामानुजदासजी, श्रीस्वामी नारायणाचार्यजी त्रिदण्डि श्री श्री मन्नारायण त्रिदण्डिजी, श्रीपरमानन्दजी शास्त्री, श्री पं० रामचरणजी शास्त्री, श्रीस्वामी रंगनाथाचार्यजी गोदाविहार, श्री पं० किशोरीरमणाचार्यजी, श्रीगदाधर पारीक बम्बई, श्रीस्वामी पुरुषोत्तमाचार्यजी, भीमकुण्ड म०प्र०, श्रीबजरंगप्रसादजी रामायणी, श्रीसरेंधीवाले पण्डितजी, श्रीनारायणलालजी असावा बम्बई, श्रीमोहनलालजी वर्मा वाराणसी, श्रीबालकृष्ण गौतम, मोहनलाल राठी इन्दौर, ओ पी. तिवारी दिल्ली आदि भागवत उपस्थित थे अन्त में सभी महानुभावों को फल, मिष्टान्न की गोष्ठी करायी गई। कार्य की पूर्णतामें आचार्य श्रीमहेश भारद्वाजजी सम्पादक-'वृन्दावन इन्साफ', श्रीरघुनन्दन अग्रवाल, गोविन्द हालदार श्रीउपेन्द्र पाण्डेय आदि का सराहनीय सहयोग स्मरणीय है।

[समारोह के फोटो कवर तीन पर देखें] प्रस्तुति—आचार्य नरेशचन्द्र शर्मा, वृन्दावन

श्रीसुदर्शन महायज्ञ एवं वैदिक सनातन धर्म सम्मेलन सम्पन्न

श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर, धनगढ़ी नेपाल में दि० १०।४।६५ से सप्तदिवसीय श्रीवैष्णव परिषद् नेपाल के तत्त्वावधान में सप्तदिवसीय वैदिक सनातन धर्म सम्मेलन, बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें नेपाल अधिराज्य के प्राय: २४-२५ जिलों से तथा अयोध्या, वाराणसी, प्रयागराज और वृन्दावन से भी विद्वानों ने भाग लिया। श्रीवैष्णव समाज की उपस्थिति दर्शनीय थी। इस सम्मेलन में धर्म के प्रचार-प्रसार, संवर्धन संरक्षण सम्बन्धी उपायों पर विद्वानों ने पर्याप्त प्रकाश डाला। इसी बीच में दक्षिण भारत से पधारे हुए विद्वान् श्रीवेंकटाचार्य जी अयंगार के आचार्यत्व में त्रिदिवसीय 'सुदर्शन महायज्ञ' का भी आयोजन किया गया। श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर के अध्यक्ष श्रीदेवराजाचार्य जी के आयोजकत्व में सम्पूर्ण व्यवस्था, सुव्यवस्थित रूप में सम्पादित हुई। स्थानीय जनता का सक्रिय सहयोग रहा।

प्रत्यक्षदर्शी— मधुसूदनाचार्य

श्रीवंशोधरजी सोमानी स्मृति शेष

सेठ श्रीबंशीधर जी सोमानी सहज विनम्रता और सेवाभाव के लिये प्रसिद्ध, स्वनामधन्य सेठ श्रीहजारीमल सोमानी जी के द्वितीय पुत्र थे, आपका विगत तीन माह पूर्व वैकुण्ठवास हो गया। आपका जन्म राजस्थानके मौलासर गांव में सम्वत् १६७१ में हुआ था। आपने शिक्षा क्षेत्र में कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में बी ए. आनर्स सन् १६३५ में उत्तीर्ण किया था, आप सोमानी परिवार के प्रथम ग्रेजुएट थे। आपने सन् १६३५ में ही व्यापार जगत में प्रवेश किया और श्रिनिवास कॉटन मिल का कार्य देखने लगे। १६५६ में आपने अमेरिका की व्यापारिक शिक्षा हेतु यात्रा की यह कार्य भी इस परिवार में प्रथम ही था। १६६८ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रदर्शनी के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया अ० भा० उत्पादक संघ के अध्यक्ष पद पर दिल्ली अधिवेशन में भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से वार्तायें कीं, अचानक आप शारीरिक बीमारियों से ग्रसित हो गये, सम्वत् २०५१ – ८० वर्ष की आयु में आपने इस संसार को छोड़ परमपद यात्रा पर प्रस्थान कर दिया, आप इस पत्रिका के और हमारे बड़े ही शुभ चिन्तक थे आपका स्नेह स्मरणीय है। 'अनन्त-सन्देश' परिवार ऐसे दिव्य आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। —केशवदेव शास्त्री

भागवत आश्रम वृन्दावन में वार्षिकोत्सव

समस्त भागवत महानुभावों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि भक्तवाञ्छा कल्पतरु श्रीवेंकटेश भगवान का तथा जगदाचार्य अनन्तश्री समलंकृत स्वामी श्रीरामानुजाचार्य जी महाराज का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सं० २०५२ वैशाख शुक्ला ४ बुधवार दि०३-५-९५ से वैशाख शुक्ला ५ शुक्रवार दि० ५-५-९५ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जावेगा।

उक्त अवसर पर प्रतिदिन सायं ३ बजे से ५ बजे तक धार्मिक प्रवचन होंगे। आपको सादर आमन्त्रित किया जा रहा है। कृपया अवश्य ही पधारने का कष्ट उद्वहन करें।

भागवत आश्रम, रंगजी का नगला
वृन्दावन

विनीत :
स्वामी रामप्रतापाचार्य

श्रीस्वामी पुरुषोत्तमाचार्यजी रघुनाथ आश्रम शेषधारा का वैकुण्ठवास

श्रीराम मन्दिर, रघुनाथ आश्रम, पाण्डुकेश्वर के महन्त श्रीस्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी का वैकुण्ठवास ३० मार्च '९५ का रात्रि में अचानक हो गया। दि० ३१ मार्च को आपके समस्त संस्कार मध्याह्न तक श्रीमाधवदास जी ने श्रीकमलाबाई के निर्देशन में सम्पन्न किये, दि० १२ अप्रेल ९५ को आपका द्वादशाह कार्य सविधि सम्पन्न हुआ। जिसमें सैकड़ों स्थानीय भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। शय्यादानादी समस्त कार्य श्रीकमलाबाई जी ने किये। वर्तमान में उक्त स्थान श्रीहरिदेव मन्दिर वृन्दावन की शाखा है श्रीस्वामी जी ने अपने शरीर छोड़ने से पूर्व उक्त स्थान को श्रीहरिदेव मन्दिराध्यक्ष स्वामीजी को सोंप दिया था।

उक्त समस्त कार्यों में श्रीहरिदेव पीठाधीश्वर श्रीस्वामीजी की अनुपस्थिति स्थानीय लोगों को खली, वे बम्बई में श्रीमद्भागवत कथा प्रवचन कर रहे थे। आपके वैकुण्ठोत्सव की तारीखें अभी निश्चित होनी है। हरिदेव मन्दिर वृन्दावन की ओर से श्रीराघवेन्द्र शर्मा एवं त्रिविक्रम शर्मा समस्त कार्यों में उपस्थित थे। —गोविन्द शर्मा, श्रीहरिदेव मन्दिर, वृन्दावन

इन्दौर में श्रीसरजूबाई जाजू का श्रीवैकुण्ठवास

श्रीवैष्णव जगत में सरजूबाई का कैंकर्य सराहनीय था। दि० १-३-९५ को वे अपने आचार्य तिरुवड़ि में पहुँच गई। अन्तिम दिन तक उन्होंने अपनी धीमी वाणी से श्रीवरदवल्लभा स्तोत्र का पठन किया और बोलीं कि 'अब मैं थक गई हूँ।' इनके मनमें वृन्दावन जाकर भी रंगनाथ भगवान का मुखोल्लास करने की बात थी। श्रीवृन्दावन में इनका मन अटका हुआ था। आप गोवर्धन गद्दी से सम्बन्धित स्वामी सीतारामाचार्यजी महाराज रामानुज कोट हरिद्वार की शिष्या थीं। वे अपने पीछे एक पुत्र कृष्णगोपाल एक पुत्री लक्ष्मी रामानुज दासी व दो पौत्र तथा एक प्रपौत्र तथा एक पौत्री श्रीमन्नारायण के संरक्षण में छोड़ गई हैं। वे ८६ वर्ष की थीं। श्रीरंगनाथ भगवान इनको अपनी नित्य सेवा प्रदान करें। तथा उनके कुटुम्बीजनों में उनकी जैसी ही निष्ठा बनाये रखें ऐसी श्रीमन्नारायण से प्रार्थना है।

—सम्पादक

ननु "ज्योतींषि विष्णुः" इति ब्रह्मैकमेव तत्त्वमिति प्रतिज्ञाय, "ज्ञानस्वरूपो भगवान् यतोऽसौ" इति शैलाब्धिधरादिभेदभिन्नस्य जगतो ज्ञानैकस्वरूपब्रह्माऽज्ञानविजृम्भितत्वमभिधाय, "यदा तु शुद्धं निजरूपि" इति ज्ञानस्वरूपस्यैव ब्रह्मणः स्वस्वरूपावस्थितिवेलायां वस्तुभेदाभावदर्शनेनाऽज्ञानविजृम्भितत्वमेव स्थिरीकृत्य, "वस्त्वस्ति किम्" "महीघटत्वम्"इतिश्लोकद्वयेन जगदुपलब्धिप्रकारेणापि वस्तुभेदानामसत्यत्वमुपपाद्य,"तस्मान्न

इत्यर्थः। उपसंहरति—अत इति, ब्रह्माज्ञानस्य—ब्रह्मण्यज्ञानस्य कल्पनं न युक्तम्। इतिहासपुराणयोरपि न ब्रह्माज्ञानकथोपलभ्यते इत्याह इतिहासेति।

अद्वैती विष्णुपुराणे ब्रह्माज्ञानं ब्रह्मातिरिक्तमिथ्यात्वं च पूर्वं प्रदर्शितमेव पुनः प्रदर्शयति—नन्वित्यादिना, "ज्योतींषि" इत्यादीनि विष्णुपुराणवाक्यानि। सर्वत्र इतिशब्दस्य इत्यनेनेत्यर्थः। "ज्योतींषि" इत्यनेनैकं ब्रह्मैव तत्त्वमिति प्रतिज्ञातम्, तदनन्तरं ज्ञानस्वरूपेत्यादिना प्रपञ्चस्य ज्ञानस्वरूपब्रह्मविषयकाऽज्ञानसिद्धत्वमुक्तम्, पुनर्यदा तु शुद्धमित्यादिना ब्रह्मणः स्वस्वरूपस्थितिकाले वस्तुभेददर्शनं न भवतीति वचनेन प्रपञ्चस्याज्ञानसिद्धत्वं स्थिरीकृतम्, पुनर्वस्त्वस्तीत्यादिना येन प्रकारेण जगदुपलभ्यते तेनापि प्रकारेण वस्तुभेदानामऽसत्यत्वमुपपादितम्, तदनन्तरं तस्मान्नेत्यादिना प्रपञ्चस्य मिथ्यात्वमुपसंहृतम् तदनन्तरं विज्ञानमित्यादिना ब्रह्मणि भेददर्शनस्य कारणं यदज्ञानं तत्कारणं

नामतत्व और रूपवत्व का प्रतिपादन किया गया है, तथा च 'त्वम्' पद की भी परमात्मपर्यन्त वाचकता ही प्राप्त होती है, अतः 'तत् और त्वम्' दोनों पदों की परमात्मवाचकता होने के कारण, सामानाधिकरण्य सिद्ध होता है और मुख्य रूप से परमात्मा एक ही होने से, ऐक्य का उपदेश उचित ही है। इत्यर्थः। उपसंहार करते हैं—अत इति, ब्रह्म में अज्ञान की कल्पना करना उचित नहीं है। इतिहास और पुराणों में भी ब्रह्म के अज्ञ होने की कथा प्राप्त नहीं होती है—इतिहासेति। अद्वैतवादी, विष्णुपुराण में—ब्रह्माज्ञान तथा ब्रह्म से अतिरिक्त के मिथ्या होने का पूर्वप्रदर्शित स्थल पुनः दिखलाता है—नन्वित्यादिना, 'ज्योतींषि विष्णुः' इत्यादि विष्णुपुराण का वचन ब्रह्म ही एक तत्त्व है, इसकी प्रतिज्ञा करके 'ज्ञानस्वरूपो भगवान् यतोऽसौ' द्वारा प्रपञ्च को ज्ञानस्वरूप ब्रह्म विषयक अज्ञान से सिद्ध कहता है, पुनः 'यदा तु शुद्धं निजरूपि' के द्वारा ब्रह्म की स्वस्वरूप में स्थिति के काल में वस्तु भेद का दर्शन नहीं होता है, इस वचन से—प्रपञ्च को अज्ञानसिद्ध स्थिर करता है। तत्पश्चात् 'वस्त्वस्ति किम्' द्वारा जिस प्रकार से जगत् प्राप्त होता है उसी प्रकार से वस्तु भेदों के असत्य होने का उपपादन करता है। तदनन्तर 'तस्मान्न' इत्यादि के द्वारा 'प्रपञ्च' के 'मिथ्या' होने का उपसंहार किया तत्पश्चात् 'विज्ञानम्' इत्यादि द्वारा 'ब्रह्म' में भेद दर्शन का कारण जो अज्ञान है उसका

विज्ञानमृते" इति प्रतिज्ञातं ब्रह्मव्यतिरिक्तस्यासत्यत्वमुपसंहृत्य, "विज्ञानमेकम्" इति ज्ञानस्वरूपे ब्रह्मणि भेददर्शननिमित्ताज्ञानमूलं निजकर्मैवेति स्फुटीकृत्य, "ज्ञानं विशुद्धम्" इति ज्ञानस्वरूपस्य ब्रह्मणः स्वरूपं विशोध्य, "सद्भाव एवं भवतो मयोक्तः" इति ज्ञानस्वरूपस्य ब्रह्मण एव सत्यत्वं नाऽन्यस्य, अन्यस्य चाऽसत्यत्वमेव, तस्य भुवनादेः सत्यत्वं व्यावहारिकमिति तत्त्वं तवोपदिष्टमेवेति ह्युपदेशो दृश्यते ?

निजं कर्मैवेति स्फुटीकृतम्, तदनन्तरं ज्ञानमित्यादिना ज्ञानस्वरूपस्य ब्रह्मणो यथार्थं स्वरूपमुक्तम्, तदनन्तरं सद्भावेत्यादिना ब्रह्मैव सत्यं नान्यत्, ब्रह्मातिरिक्तं सर्वमसत्यमेव, प्रपञ्चस्य यत्सत्यत्वं प्रतीयते तद् व्यावहारिकमेव न पारमार्थिकमित्येवं सर्वमेव मदुक्तं ब्रह्माज्ञानं च विष्णुपुराणे एव प्रतिपादितमिति कथमुच्यते—'इतिहासपुराणयोर्ब्रह्माज्ञानवादो न दृश्यते इति इत्यर्थः ।

परिहरति—नैतदिति, यस्त्वयार्थ उच्यते स नास्तीत्यर्थः, यस्य प्रकरणस्य पद्यानि त्वया स्वमतोपपादकत्वेनोदाहृतानि तस्मिन् प्रकरणे भुवनकोशस्य विस्तीर्णं स्वरूपमुक्तं तत्र यन्नोक्तं तत्कथनार्थमेव "श्रूयताम्" इत्यनेनारभ्य संक्षेपतोभिधीयते इति नात्र ब्रह्माज्ञानप्रतिपादनमस्तीत्यर्थः । चिदिति—चिदचित्समुदाय एव प्रपञ्चोस्ति तत्र चिद्वर्गो वाङ्मनसागोचरत्वे सति स्वसम्वेद्यस्वरूपविशेषवानस्ति ज्ञानैकाकारत्वेन प्राकृतरूपरहितोस्ति अविनाशित्वेनास्तिशब्दवाच्योस्तीति स एवात्रास्ति शब्देनोच्यते

कारण निज कर्म ही है यह स्पष्ट किया, इसके बाद 'ज्ञानम्' इत्यादि से ज्ञानस्वरूप ब्रह्म का यथार्थ स्वरूप कहा, तदनन्तर 'सद्भाव' इत्यादि के द्वारा ब्रह्म ही सत्य है, ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य सब कुछ असत्य ही है, प्रपञ्च की जो सत्यता प्रतीत होती है, वह व्यावहारिक ही है पारमार्थिक नहीं है इत्यादि सब कुछ जो मैंने कहा है तथा ब्रह्म का अज्ञान—यह सब विष्णु पुराण में ही प्रतिपादित है फिर कैसे कहते हो कि—इतिहास और पुराण में ब्रह्म का अज्ञानवाद नहीं दिखलायी पड़ता है । इति । इत्यर्थः ।

परिहार करते हैं—नैतदिति—जो अर्थ आप (अद्वैती) द्वारा कहा गया है वह नहीं है । जिस प्रकरण के पद्य आपने अपने मत के प्रतिपादक रूप में उद्धृत किये हैं, उस प्रकरण में भुवन कोश का विस्तृत स्वरूप कहा गया है, वहाँ जो नहीं कहा गया है उसके कथन के लिए ही 'श्रूयताम्' से आरम्भ करके 'संक्षेप से कहा जाता है' पर्यन्त यहाँ ब्रह्मके अज्ञान का प्रतिपादन नहीं है, इत्यर्थः । चिदिति—चित् और अचित् का समुदाय ही प्रपञ्च है यहाँ चिद्वर्ग मन और वाणी का अविषय होता हुआ स्व संवेद्य स्वरूप विशेष वाला है, ज्ञानैकाकार होने से प्राकृत रूप रहित है, 'अविनाशी' होने से 'अस्ति' शब्दाभिधेय है, वही यहाँ 'अस्ति' शब्द से कहा गया है न कि केवल ब्रह्ममात्र ही सत्य है—यह कहा

नैतदेवम्—अत्र भुवनकोशस्य विस्तीर्णं स्वरूपमुक्त्वा पूर्वमनुक्तं रूपान्तरं संक्षेपतः "श्रूयताम्" इत्यारभ्याऽभिधीयते। चिदचिन्मिश्रे जगति चिदंशो वाङ्मनसागोचरस्वसंवेद्यस्वरूपभेदो ज्ञानैकाकारतयाऽस्पृष्टप्राकृतभेदोऽविनाशित्वेनाऽस्तिशब्दवाच्यः। अचिदंशस्तु चिदंशकर्मनिमित्तपरिणामभेदो विनाशीति नास्तिशब्दाभिधेयः। उभयं तु परब्रह्मभूतवासुदेवशरीरतया तदात्मकम् इत्येतद्रूपं संक्षेपेणात्राभिहितम्, तथा हि—

"यदम्बु वैष्णवः कायस्ततो विप्र वसुन्धरा।
पद्माकारा समुद्भूता पर्वताब्ध्यादि संयुता॥"

इत्यम्बुनो विष्णुशरीरत्वेनाऽम्बुपरिणामभूतं ब्रह्माण्डमपि विष्णोः कायः, तस्य च विष्णुरात्मेति सकलश्रुतिगततादात्म्योपदेशोपबृंहणरूपस्य सामानाधिकरण्यस्य "ज्योतींषि

न तु ब्रह्ममात्रस्य सत्त्वमित्यर्थः। अचिद्वर्गस्य तु जीवकृतकर्ममूलको पटघटशरीरादिरूपेण परिणामविशेषो भवति स च परिणामित्वाद्विनाशी विनाशित्वाद् नास्तिशब्दवाच्यः, उभयम्=चिद्वर्गोऽचिद्वर्गश्चेत्युभयमेव वासुदेवशरीरतया तदात्मकम्=वासुदेवात्मकम्, अन्तर्यामिरूपेण वासुदेव आत्मा यस्य तादृशमस्ति, एतद्रूपम्=सर्वस्य वासुदेवात्मकत्वादिरूपम्। अत्र विष्णुपुराणं प्रमाणयति–यदिति, जलं विष्णोः शरीरभूतं तस्मात् पृथ्वी समुत्पन्ना इत्यर्थः, उक्तश्लोकप्रतिपाद्यमाह–इत्यम्बुन इति, अम्बुपरिणामभूतम्=जलादुत्पन्नम्। तस्य=ब्रह्माण्डस्य। सकलेति–"तत्त्वमसि" इत्यादिश्रुतिबोध्यो यस्तादात्म्योपदेशः=एकत्वोपदेशस्तदुपबृंहणरूपस्यं=तद्व्याख्यानरूपस्य "ज्योतींषि विष्णुर्भुवनानि विष्णुः"

गया है। इत्यर्थः। अचिद् वर्ग का तो जीवकृत कर्ममूलक घट, पट, शरीर आदि रूप से परिणाम विशेष मात्र होता है और वह परिणामी होने से विनाशी 'नास्ति' शब्द वाच्य (होता) है। चिद् वर्ग और अचिद् वर्ग दोनों ही वासुदेव के शरीर होने के कारण तदात्मक अर्थात् वासुदेवात्मक है, अन्तर्यामी रूप से भगवान् वासुदेव हीं चिद् अचिद् दोनों वर्गों के आत्मा (=धारक) हैं। चिद् अचिद् समस्त प्रपञ्च की यह वासुदेवात्मकता संक्षेप में यहाँ कही गई है। (तथा हि) जैसा कि विष्णुपुराण में कहा गया है—जल भगवान् विष्णु का शरीर है, हे विप्र! उस जल से, कमल के आकार वाली, पर्वत समुद्रादि युक्त, वसुन्धरा (=पृथ्वी) उत्पन्न हुई है। "यदम्बु" इत्यादि इस श्लोक का प्रतिपाद्य बतलाते हैं—'इत्यम्बुन' इति, जल के विष्णु शरीर रूप होने से अम्बु परिणाम भूत अर्थात् जल से उत्पन्न ब्रह्माण्ड भी विष्णु का शरीर है, इस ब्रह्माण्ड रूप शरीर की आत्मा भगवान् विष्णु हैं–यह 'तत्त्वमसि' आदि समस्त श्रुति बोध्य जो तादात्म्य (=एकत्व) उपदेश है, उसका उपबृंहण=व्याख्यान रूप 'ज्योतींषि विष्णुः, भुवनानि विष्णु' इत्यादि वक्ष्यमाण सामानाधिकरण्य अर्थात् एकत्व बोधन

विष्णुः" इत्यारभ्य वक्ष्यमाणस्य शरीरात्मभाव एव निबन्धनमित्याहुः। अस्मिन् शास्त्रे पूर्वमप्येतदऽसकृदुक्तम्—"तानि सर्वाणि तद्वपुः" "तत्सर्वं वै हरेस्तनुः" "स एव सर्वभूतात्मा प्रधानपुरुषात्मनः, विश्वरूपो यतोऽव्ययः" इति।

तदिदं शरीरात्मभावायत्तं तादात्म्यं सामानाधिकरण्येन व्यपदिशति—"ज्योतींषि विष्णुः" इति, अत्राऽस्त्यात्मकं नास्त्यात्मकं च जगदन्तर्गतं वस्तुविष्णोः कायतया विष्ण्वात्मकमित्युक्तम्, इदमस्त्यात्मकम्, इदं नास्त्यात्मकम्, अस्य च नास्त्यात्मकत्वे हेतुरय-

---

इत्यारभ्य वक्ष्यमाणस्य सामानाधिकरण्यस्य=एकत्वबोधनस्य प्रपञ्चपरमात्मनोः शरीरात्मभावः=प्रपञ्चः शरीरं परमात्मा तस्यात्मेति सम्बन्ध एव निबन्धनम्=कारणमस्तीत्यन्वयः; "ज्योतींषि विष्णुः" इतिसामानाधिकरण्येन तेजसां विष्णोश्चाभेदः प्रतीयते स च शरीरात्मभावेन, यथा चैत्रादीनां स्वशरीरेणेत्यर्थः। अस्मिन् शास्त्रे=विष्णुपुराणे, एतत्=प्रपञ्चपरमात्मनोः शरीरात्मभावः। उदाहरति—तानीति, तद्वपुः=विष्णुवपुः। यतो विश्वरूपस्ततः स एव हरिः सर्वभूतात्मा।

तदिदमिति—शरीरात्मभावायत्तम्=शरीरात्मभावाधीनम्। ज्योतींषीतिपद्यप्रतिपाद्यमाह—अत्रेति, "यदस्ति नास्तीति तदेव विष्णुः"अत्राऽस्त्यात्मकं चिद्वर्गः नास्त्यात्मकं चाचिद्वर्गस्तत्सर्वं विष्णुशरीरत्वेन विष्ण्वात्मकम् तत्र चिद्वस्तु अविनाशित्वादस्त्यात्मकम्,अचिद्वस्तु च विनाशित्वान्नास्त्यात्मकम्।

प्रपञ्च और परमात्मा के शरीर शरीरी भाव मूलक ही है। प्रपञ्च शरीर है और परमात्मा उसकी आत्मा है। इत्यन्वयः। 'ज्योतींषि विष्णुः' इस सामानाधिकरण्य से तेज और विष्णु का अभेद प्रतीत होता है यह शरीरात्म भाव के कारण ही प्रतीत होता है। जैसे चैत्र आदि का अपने शरीर के साथ (शरीरात्म भाव के कारण) अभेद प्रतीत होता है। चैत्र शरीर में स्थित आत्मा को भी चैत्र कहा जाता है और चैत्र के शरीर को भी चैत्र ही कहते हैं। इस शास्त्र विष्णु पुराण में प्रपञ्च और परमात्मा का शरीरात्म भाव पहले भी अनेक बार कहा गया है—'तानि सर्वाणि तद् वपुः', 'तत्सर्वं वै हरेस्तनुः', 'स एव सर्वभूतात्मा प्रधानपुरुषात्मनः, 'विष्णुरूपो यतोऽव्ययः'। यहाँ तद्-वपुः का अर्थ है वे सब पदार्थ विष्णु के शरीर हैं। विश्वरूप होने के कारण श्रीहरि ही सर्वभूतात्मा है।

तदिदमिति, 'ज्योतींषि विष्णुः' इत्यादि कथन, शरीरात्मभावाधीन तादात्म्य का सामानाधिकरण्य द्वारा उपदेश करता है। 'ज्योतींषि' इत्यादि पद्य के प्रतिपाद्य को कहते हैं—अत्रेति, यहाँ अस्त्यात्मक (=अस्तिशब्द वाच्य) और नास्त्यात्मक (=नास्ति शब्द वाच्य) जो, जगदन्तर्गत वस्तु—चिद् वर्ग तथा अचिद् वर्ग है—वह सब विष्णु का शरीर होने से विष्ण्वात्मक कहा गया है, 'यदस्ति नास्तीति तदेव विष्णुः' चिद् वस्तु अविनाशी होने के कारण अस्त्यात्मक एवं अचिद् वस्तु विनाशी होने से नास्त्यात्मक कही जाती है, यह सब विष्णु की शरीर हैं, विष्णु इनकी आत्मा हैं। 'ज्ञानस्वरूपः'

मित्याह—"ज्ञानस्वरूपो भगवान् यतोसौ" इति, अशेषक्षेत्रज्ञात्मनावस्थितस्य भगवतो ज्ञानमेव स्वाभाविकं रूपं न देवमनुष्यादिवस्तुरूपम्, यत् एवं तत एवाऽचिद्रूपदेवमनुष्य-शैलाब्धिधरादयश्च तद्विज्ञानविजृम्भिताः=तस्य ज्ञानैकाकारस्य सतो देवाद्याकारेण स्वात्म-वैविध्यानुसन्धानमूलाः=देवाद्याकारानुसन्धानमूलकर्ममूला इत्यर्थः।

यतश्चाऽचिद्वस्तु क्षेत्रज्ञकर्मानुगुणपरिणामास्पदं ततस्तद् नास्तिशब्दाभिधेयम्,

---

"ज्ञानस्वरूपः" इतिपद्यस्यावतरणमाह—इदमिति, अस्य=अचिद्वर्गस्य। क्षेत्रज्ञात्मना=जीवस्वरूपेण जीवस्य भगवच्छरीरत्वाद् भगवतो जीवस्वरूपत्वं विज्ञेयं न तु व्यक्त्यैक्यम्, यच्च देवदेहादिवस्तु तन्न तस्य रूपं तस्य प्रकृतिपरिणामत्वादित्याह -नेति। यत एवम्=ज्ञानमेव जीवात्मस्वरूपं तत एवाचिद्रूपा देवादिदेहादिपदार्थास्तद्विज्ञानविजृम्भिताः, अस्यार्थमाह—तस्येति, तस्य=जीवस्य, स्वात्मनः 'देवोऽहं नरोहम्' इत्यादिवैविध्यानुसन्धानमूलकाः, अस्याप्यर्थमाह—देवाद्येति, स्वात्मनो देवाद्याकारेणानुसन्धा-नस्य मूलं यत् कर्म तन्मूलका देहादिपदार्था इत्यर्थः। अनेन पद्येन प्रपञ्चमिथ्यात्वं न प्रतिपाद्यते इतिभावः।

अचिद्वर्गस्य नास्तिशब्दाभिधेयत्वे हेतुमाह—यत इति, जीवकर्मानुगुणो यः परिणामस्तद्वत्, ततः=परिणामित्वात्, तत्=अचिद्वस्तु, सदैकरूपेण स्थितेरभावेन स्थिर नास्तीति नास्तिपदवाच्यम्। इतरम्=चिद्वस्तु सदैकरूपेण स्थितत्वात् स्थिरमस्तीत्यऽस्तिशब्दवाच्यम्। "यदा तु शुद्धम्" इतिपद्य-

---

इस पद्य का अवतरण बतलाते हैं—इदमिति; अस्य=इस अचित् वर्ग का, क्षेत्रज्ञात्मना=जीवस्वरूप द्वारा, जीव भगवान् का शरीर है अतः भगवान् की जीवस्वरूपता जाननी चाहिए, जीव और परमात्मा एक ही व्यक्ति हैं—यह नहीं समझना चाहिए। जो देव देहादि वस्तु है वह उस क्षेत्रज्ञात्मा रूप में स्थित परमात्मा का रूप नहीं है वह देहादि वस्तु तो प्रकृति का परिणाम है। यह कहा गया है—नेति। ज्ञान ही जीवात्मा का स्वरूप है इसलिए अचिद् रूप=देवादि देह आदि पदार्थ उसके विज्ञान से विजृ-म्भित (=विलसित) हैं—इसका अर्थ बतलाते हैं—देहादि उस ज्ञानैकाकार जीव से अपने 'मैं देवता हूँ, मैं मनुष्य हूँ' इत्यादि तरह-तरह के अनुसन्धान मूलक हैं। अर्थात् जीवात्मा के अपने देवादि आकार रूप में अनुसन्धान का मूल जो कर्म है, तन्मूलक ही देहादि पदार्थ हैं—इत्यर्थः। इस प्रकार इस 'ज्ञान-स्वरूपः' पद्य के द्वारा प्रपञ्च के मिथ्या होने का प्रतिपादन नहीं किया गया है। इति भावः।

अचिद् वर्ग के 'नास्ति' शब्द वाच्य होने का कारण कहते हैं—यत इति, क्योंकि अचिद् वस्तु, जीव के कर्मानुसार गुण परिणाम को प्राप्त करती है इसलिए वह 'नास्ति' शब्दाभिधेय है। अर्थात् परिणामी होने से अचिद् वस्तु सदा एक रूप में स्थित न रहने के कारण ही 'नास्ति' पद वाच्य है।

इतरदऽस्तिशब्दाभिधेयमित्यर्थादुक्तं भवति। तदेव विवृणोति—"यदा तु शुद्धं निजरूपि" इति, यदैतत् ज्ञानैकाकारमात्मवस्तु देवाद्याकारेण स्वात्मनि वैविध्यानुसन्धानमूलसर्वकर्म-क्षयाद् निर्दोषं परिशुद्धं निजरूपि भवति तदा देवाद्याकारेणैकीकृत्याऽऽत्मकल्पनमूलकर्म-फलभूतास्तद्भोगार्था वस्तुषु वस्तुभेदा न भवन्ति=ये देवादिवस्तुष्वाऽऽत्मतयाभिमतेषु भोग्यभूता देवमनुष्यशैलाब्धिधरादिवस्तुभेदास्ते तन्मूलभूतकर्मस्तु विनष्टेषु न भवन्तीत्यऽ-

---

मवतारयति—तदेवेति, तत्, पदार्थानामुक्तं विज्ञानविजृम्भितत्वमेव विवृणोति स्वात्मनि 'देवोहं नरोहम्' इत्येवं देवाद्याकारेण यद् वैविध्यानुसन्धानं तन्मूलभूतं यत्कर्म तस्य सर्वस्य भगवदुपासनया क्षयात् निर्दोषं निजरूपि=ज्ञानस्वरूपत्वानुभववद् यदा भवति तदा। देवाद्याकारेण=देवादिदेहेनैकी-कृत्य यदात्मकल्पनम्='देवोहं नरोहम्' इत्यादिज्ञानं तन्मूलं यत्कर्म तत्फलभूतास्तद्भोगार्थाः=जीव-भोगार्था वस्तुषु=देहादिषु वस्तुभेदा ये ते भोगार्था न भवन्ति=तेषां भोगो न भवति, अस्यार्थमाह—ये इति। देवादिवस्तुषु=देवादिशरीरेषु। कादाचित्कावस्थायोगितया=सदैकरूपेण स्थिरत्वाभात्। इतरस्य=चिद्वर्गस्य निजसिद्धम्=स्वतः सिद्धं स्वाभाविकं यज्ज्ञानैकाकारत्वं तेन हेतुना सदैकरूपत्वाद् अस्तिशब्दवाच्यत्वम्। स्पष्टमन्यत्।

"वस्त्वस्ति किम्" इतिपद्यप्रतिपाद्यमाह—प्रतिक्षणमिति, अन्यथाभूततया=परिणममानतया।

अचित् से इतर=दूसरी चिद् वस्तु सदा एक (=ज्ञान) रूप में स्थित रहने के कारण स्थिर होती है अतः 'अस्ति' शब्द वाच्य है। अचित्=नास्ति। चित्=अस्ति। 'यदा तु शब्दम्' इत्यादि पद्य का अवतरण कराते हैं—तदेवेति। तत्=पदार्थों का उक्त विज्ञान विजृम्भित होना समझाते हैं—अपने आपको 'मैं देवता हूँ' 'मैं मनुष्य हूँ' इस प्रकार देवता आदि के रूप में जो विविध प्रकार का अनुसन्धान है, उसका मूल कर्म है, भगवान् की उपासना से जब उस समस्त कर्म का क्षय हो जाता है तब निर्दोष निज ज्ञान स्वरूपता का अनुभव जीव को होता है। देवाद्याकारेण=देवादिदेह के द्वारा 'देवोऽहम्' 'नरोऽहम्' मैं देवता हूं मैं मनुष्य हूं इत्यादि ज्ञान का मूल जो कर्म है, उसके फलभूत, (जीव के) भोग के लिए (भोग्य पदार्थ होते हैं, देव मनुष्य आदि शरीरों के लिए) नहीं होते हैं। इसका आशय स्पष्ट करते हुए कहते हैं—आत्मरूप में अभिमत देवादि शरीरों में, भोग्यभूत देव-मनुष्य-समुद्र-पृथिवी आदि वस्तुयें अपने मूलभूत कर्म के नष्ट होने पर नहीं रहती हैं, इसीलिए अचित् वस्तु को, सदा एक रूप में स्थिर न रहने के कारण ही 'नास्ति' शब्द का वाच्य अर्थ कहा जाता है। इसके विपरीत चिद्वर्ग को, स्वतः सिद्ध स्वाभाविक ज्ञानैकाकार होने के कारण सदा एक रूप में रहने से 'अस्ति' शब्द का वाच्य अर्थ कहा जाता है। अन्य सब (यहाँ का मूल भाष्य) स्पष्ट है।

(इसके आगे—) 'वस्तु-अस्ति किम्' इत्यादि पद्य के प्रतिपाद्य का निरूपण करते हैं—प्रतिक्षण-

चिद्वस्तुनः कादाचित्कावस्थायोगितया नास्तिशब्दाभिधेयत्वम्, इतरस्य सर्वदा निजसिद्ध-ज्ञानैकाकारत्वेनाऽस्तिशब्दाभिधेयत्वमित्यर्थः।

प्रतिक्षणमन्यथाभूततया कादाचित्कावस्थायोगिनोऽचिद्वस्तुनो नास्तिशब्दाभिधेयत्वमेवेत्याह—"वस्त्वस्ति किम्" इति। अस्तिशब्दाभिधेयो ह्यादिमध्यपर्यन्तहीनः सततैकरूपः पदार्थः—तस्य कदाचिदपि नास्तिबुद्ध्यऽनर्हत्वात्। अचिद्वस्तु किंचित् क्वचिदपि तथाभूतं न दृष्टचरम् ततः किम्? इत्यत्राह—"यच्चान्यथात्वम्" इति=यद्वस्तु प्रतिक्षण-

तद्—"क्षणपरिणामिनो हि भावा ऋते चितिशक्तेः" इति। चिद्वर्गस्य स्वरूपमाह—अस्तीति, पर्यन्तहीनः=अन्तहीनः। यः सततैकरूपो जीवपदार्थः सोऽस्तिशब्दवाच्यः, हेतुमाह—तस्येति, तस्यः=जीववर्गस्य, नास्तीतिबुद्ध्यऽविषयत्वादस्तिशब्दवाच्यत्वम्,जीवस्य परिणामाभावाद् नास्तीतिबुद्धचविषयत्वम्। अचिदिति-अचिद्वस्तु तु क्वचिदपि किमपि तथाभूतम्=सततैकरूपं परिणामरहितं न दृष्टमिति। 'वस्तु किमस्ति चेतनातिरिक्तम्? किमपि नास्ति=नास्तिशब्दाभिधेयमचिद्वस्तु' इतिपद्याभिप्रायः। ततः किमिति—अचिद्वस्तुनः सततैकरूपस्याऽदर्शनेन किं प्राप्तमित्याशङ्क्याह—यच्चान्यथात्वमिति, अस्य पद्यस्यार्थमाह—यद्वस्त्विति, अन्यथात्वं याति=परिणमति। तस्य=प्रतिक्षणं परिणामशीलस्य। प्रतिसन्धानमिति—'तदेवेदम्' इतिप्रत्यभिज्ञा न सम्भवति, यादृशावस्थया पूर्वं दृष्टं तस्या अवस्थायाः

मिति, प्रत्येक क्षण में अन्यथा भूत अर्थात् परिणाम को प्राप्त होने से, सदा एक रूप में न रहने के कारण अचित् वस्तु को 'नास्ति' शब्द द्वारा कहा जाता है—इसी बात को वस्त्वस्तिकिम् पद्य द्वारा कहा गया है। चित् शक्ति के अतिरिक्त समस्त पदार्थ क्षण परिणामी (=हर क्षण बदलने वाले) हैं। चित् वर्ग का स्वरूप बतलाते हैं—अस्तीति, अस्ति शब्द वाच्य, आदि मध्य और अन्तरहित, सदा एक रूप में रहने वाला जीव पदार्थ कभी भी 'नास्ति' बुद्धि का विषय नहीं बनता है नास्ति बुद्धि का विषय न होने के कारण ही उस चित् या जीव वर्ग को अस्ति शब्द वाच्य कहा जाता है। जीव का परिणाम न होने से, वह नास्ति बुद्धि का विषय नहीं होता है। ऐसा कभी भी नहीं कहा जा सकता कि 'जीव' नहीं है। वह नित्य है। अचित् (जड़) वस्तु तो कभी सदा एक रूप में, परिणाम रहित नहीं देखी जाती है, उसका प्रतिक्षण परिणाम होता रहता है। चेतन के अतिरिक्त क्या वस्तु है? कुछ भी नहीं क्योंकि चेतनातिरिक्त अचित् वस्तु 'नास्ति' शब्दाभिधेय है। यही इस पद्य का अभिप्राय है। ततः किमिति—अचित् वस्तु के सदा एक रूप में दर्शन के न होने से क्या प्राप्त होता है? इस आशङ्का पर कहते हैं—यच्चान्यथात्वमिति, जो वस्तु प्रत्येक क्षण में परिणाम को प्राप्त होती है (=हर क्षण बदलती रहती हैं) वह उत्तरोत्तर अवस्था की प्राप्ति द्वारा पूर्व-पूर्व अवस्था को त्याग देती है, अतः प्रतिक्षण परिणाम शील उस वस्तु की पूर्वावस्था का उत्तर अवस्था में भान नहीं होता है। अर्थात् 'यह वही वस्तु है' ऐसा ज्ञान नहीं होता है, जिस अवस्था में इसे पहले देखा था, उस अवस्था का

मन्यथात्वं याति तद् उत्तरोत्तरावस्थाप्राप्त्या पूर्वपूर्वावस्थां जहातीति तस्य पूर्वावस्थस्योत्तरावस्थायां न प्रतिसंधानमस्ति, अतः सर्वदा तस्य नास्तिशब्दाभिधेयत्वमेव तथा ह्युपलभ्यते इत्याह—"मही घटत्वम्" इति=स्वकर्मणा देवमनुष्यादिभावेन स्तिमितात्मनिश्चयैः स्वभोग्यभूतमचिद्वस्तु प्रतिक्षणमन्यथाभूतमालक्ष्यते=अनुभूयते इत्यर्थः। एवं सति किमप्यचिद्वस्तु अस्तिशब्दार्हमाऽऽदिमध्यपर्यन्तहीनं सततैकरूपमालक्षितमस्ति किम् ?=न ह्यस्तीत्यभिप्रायः।

प्रत्यभिज्ञानकावेलायामभावात्। पर्यवसानमाह–अत इति, तस्य=अचिद्वस्तुनः, प्रत्यभिज्ञानाभावेस्तिशब्दवाच्यत्वं न सिध्यति। तथेति—अचिद्वस्तु तथा=परिणममानत्वेनैवोपलभ्यते इत्याह—"महीघटत्वम्" इति, अस्य पद्यस्य प्रतिपाद्यमाह—स्वकर्मणेति, स्वकर्मणा प्राप्तो यो देवमनुष्यादिभावः=देवादिदेहस्तत्संसर्गेण स्तिमितात्मनिश्चयैः=स्तिमितः=नष्ट आत्मनिश्चयः=आत्मस्वरूपज्ञानं येषां तैरपि अचिद्वस्तु प्रतिक्षणं परिणामित्वेन लक्ष्यते एव। व्यतिरेकेणाचिद्वस्तुनः सततैकरूपत्वाभावेऽभिप्रायमाह–एवमिति।

"तस्मान्न विज्ञानमृतेस्ति किंचित्" इतिपद्यस्यावतरणमाह—यस्मादेवमिति। केवलेति—'अत्रास्ति तत्रास्ति' इत्येवमचिद्वस्तुनोऽत्रादिपदघटितास्तिशब्दवाच्यत्वेपि 'अस्ति' इत्येवं केवलास्तिशब्दवाच्यत्वं

प्रत्यभिज्ञा काल में अभाव रहता है। अतः सदा उसको नास्ति' शब्द से ही कहा जाता है। अचित् वस्तु का प्रत्यभिज्ञान न होने से इसे अस्ति शब्द वाच्य नहीं कहा जाता है। तथेति,–अचिद् वस्तु परिणामी रूप में ही प्राप्त होती है। इसके प्रतिपादक पद्य– 'महीघटत्वम्' का अर्थ कहते हैं–स्वकर्मणेति,–स्वकर्म के द्वारा प्राप्त जो देव मनुष्य आदि भाव (=देह) है उसके संसर्ग से जिनका आत्म स्वरूप ज्ञान नष्ट हो गया है उनके द्वारा भी अचिद् वस्तु प्रतिक्षण परिणामी रूप में (अर्थात् हर समय बदलती हुई) ही देखी जाती है। व्यतिरेकमुखेन, अचिद् वस्तु के सतत एक रूप में न होने का अभिप्राय कहते हैं–एवमिति–ऐसा होने पर, क्या कोई अचिद् वस्तु अस्तिशब्द योग्य आदि मध्य और अन्त रहित, सदा एक रूप वाली देखी गई है ? (अर्थात्) नहीं देखी गई–यही अभिप्राय है।

'तस्मान्नविज्ञानमृतेऽस्ति किञ्चित्' पद्य का अवतरण कहते हैं–यस्मादेवमिति, जब ऐसी बात है तब इसलिये ज्ञान स्वरूप आत्मा से भिन्न कोई अचिद् वस्तु किसी भी देश काल में अस्ति शब्द वाच्य नहीं होती है (केवल आत्मा ही सदा अस्ति शब्द वाच्य है) अचिद् वस्तु यहाँ है—वहाँ है, इस प्रकार के व्यवहार को तो प्राप्त करती है परन्तु केवल अस्ति शब्द वाच्य (सदा रहने वाली) नहीं कही जाती है

श्रीरामानुज सम्प्रदाय के महान् सन्त श्रीस्वामी रंगाचार्यजी महाराज (काशी) स्मृति महोत्सव वृन्दावन के छाया-चित्र

स्वामी श्रीरंगाचार्यजी महाराज (काशी) स्मृति महोत्सव के सुव्यवस्थित विशाल मंच पर विराजमान श्रीसम्प्रदाय के विशिष्ट सन्त-महन्त एवं प्रवचनों का आनन्द लेते भक्तगण

महोत्सव पर प्रकाश डालते पं. श्रीकेशवदेव शास्त्री सम्पा.-अ.स. मंचासीन–सर्वप्रथम वयोवृद्ध विद्वान् पुरुषोत्तमाचार्यजी अहमदाबाद ज गु.रा देवनारायण जीयरजी, श्रीभगवानदासजी वृन्दावन श्रीयोगीराज जी काशी

परम्परानुसार विशिष्ट सन्त श्रीयोगिराज स्वामीजी काशी एवं ज.गु.रा.श्रीस्वामी भगवानदासाचार्यजीमहाराज केशीघाट, वृन्दावन को सम्मान स्वरूप चदरा प्रदान करते हुए महोत्सव के संयोजक–पं० श्रीकेशवदेवजी शास्त्री, साथ खड़े पुत्र-नरेश शर्मा

समारोह के विशाल पण्डाल श्रीरंगनाथ प्रेस प्रांगण में उपस्थित श्रीवैष्णव महानुभाव

रजि० नं० एम० टी० आर० 200

अनन्त-सन्देश के उद्‌देश्य

सर्वसाधारण भगवत्प्रेमानुरागियों को प्रभु प्रेम-रसामृतपान कराकर मानव समाज को पूर्ण सुख शान्ति प्रदान करते हुए ईश्वरोन्मुख होने में उत्पन्न भ्रम, विवाद एवं परस्पर द्वेष को समूल नष्ट करना और भगवत्प्रेम के दिव्य आदेश को उपस्थित करना साथ ही पूज्य श्रीकांची प्र० भ० अनन्त श्रीविभूषित श्रीस्वामी अनन्ताचार्यजी महाराज के सदुपदेशों का प्रचार-प्रसार व श्रीवैष्णव सम्प्रदाय की वृद्धि इस मासिक-पत्र का उद्देश्य है।

नियम

—यह पत्र शुद्ध पारमार्थिक पथ का पथिक है।

व्यवस्था सम्बन्धी

१—पत्र प्रत्येक माह की २७ तारीख को प्रकाशित होगा। किसी कारणवश देर भी हो सकती है।

२—इस पत्र की वार्षिक भेंट देश में २५)रु० होगी।

३—जो सज्जन इसको एक समय में ३०१)रु० भेंट प्रदान करेंगे वे पत्र के आजीवन सदस्य होंगे, यह पत्र उन्हें आजीवन मिलता रहेगा।

४—जो सज्जन मास की ५ तारीख तक पत्र प्राप्त न कर सकें, उन्हें कार्यालय को पत्र लिखकर कारण जान लेना चाहिये यदि अङ्क नहीं भेजा गया होगा तो भेजा जायेगा। यदि भेज दिया गया है तो उसकी जानकारी दी जायेगी।

५—व्यवस्था सम्बन्धी सभी पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते पर करना चाहिये।

सम्पादक सम्बन्धी

१—इस पत्र में भगवत् प्रेम सम्बन्धी, ज्ञान, भक्ति प्रपत्ति के भावपूर्ण लेख एवं कवितायें ही प्रकाशित हो सकेंगीं।

२—लेख स्पष्टतया कागज के एक ओर लिखकर भेजना चाहिये।

३—लेखों के घटाने-बढ़ाने, छापने न छापने आदि का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

४—लेख, कविता तथा सम्बन्धित-पत्र सम्पादक अनन्त-सन्देश, वृन्दावन, उ०प्र० के पते पर भेजना चाहिए जो माह की १० तारीख तक मिल सकें।

५—विवादास्पद एव अधूरे लेख स्वीकृत न होंगे।

६—किसी लेखक के मत के उत्तरदायी सम्पादक नहीं होंगे।

७—सम्पादक सम्बन्धी समस्त लिखा-पढ़ी निम्न पते पर करनी चाहिए।

—पत्र व्यवहार के पते—

व्यवस्थापक—
श्रीवेङ्कटेश देवस्थान
८०/८४ फणसवाड़ी, बम्बई—२

सम्पादक—
श्रीरङ्गनाथ प्रेस
वृन्दावन (मथुरा) उ० प्र०, फोन : ४४२१११

इस पत्र के व्यवस्थापक एवं मालिक श्रीवेङ्कटेश देवस्थान ८०/८४ फणसवाड़ी, बम्बई–२ ने सम्पादक पं. श्रीकेशवदेश शास्त्री द्वारा श्रीरङ्गनाथ प्रेस, रङ्गजी का पश्चिम कटरा, वृन्दावन से छपवाकर प्रकाशित किया।